पाँचवाँ अध्याय

स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के नए तेजल

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध समानता है। इनका समानता दी सुषिदित के अभिव्यक्ति का समानता है। इसलिए सुषिदि के आदिक तस्मान ही है एक - दूसरे के प्रति आकर्षित रहें है। इस आकर्षण की तद में प्रेम ही ऐसा एक तल्ला है, जो मानवीय सम्बन्धों को प्रशंसत करता ही रहता है। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के सन्दर्भ में प्रेम ही नहीं, उससे बदलकर उन दोनों के बीच में और एक नामीन सम्बन्ध या पन्नदिता वर्तमान रहती है। इसके कारण स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सुनुद एवं स्वस्थ बनकर सामाजिक संस्था परिवार के गठन में सफल निकलता है। हमारी परमर्श्लन एवं संस्कृति में स्त्री-पुरुष के इस पथन एवं नैतिक संबंध का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्राचीन नारी

---------------------

वैदिक पुराण में नारी की पूजा की जाती थी। जैसे, "यद्व नार्य्यसुदु पुज्यते रमन्ते तन्मू देवता।" कालान्तर में नारी का यह पूज्य रूप पुरुष-प्रथान समाज की पराक्रमित वृत्तियों का शिकार बनकर नकट-मुक्त होने लगा है।

---------------------

10. टिकाकर हरमोदिन्ध शास्त्री, "महामृत्यु", पृ. 113.
आधुनिक नारी

आधुनिक समाज-चयरता में खासकर स्वातंत्र्याधीनतायुग में स्त्री-पुरुष-सम्बन्धों में कई परिवर्तन हुए हैं। पालकाधीश धर्म, नारी आन्दोलन, शिक्षा, पारंपरिक 
प्रभाव एवं स्वातंत्र्य भावना के परिवर्तन स्त्री-पुरुष-संबन्धों की परम्परागत 
धारणाओं में धार्मिक उत्पादन हुआ। नारी-शिक्षा के क्षेत्र में जैविक जीवन 
में नए दृष्टिकोण का जन्म हुआ, नवीन पैदला और उदय हुआ। नवीन परिवर्तनों 
के प्रभाव के फलस्वरूप पत्तियाँ देशों की नारियों की आत्मिक बेहतरीन 
स्विंबित्त बढ़ी और जीवन में अल्पक्षण आधुनिकता के प्रति आग्रह भी 
बढ़ा।

पुरुष-स्त्री सम्बन्ध में स्त्री-पुरुष दोनों को समान अधिकार दिया है। पुरुष 
सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से नारी के पुरुष के समुक्षी होने की 
प्रतिज्ञा आरंभ हुई है। इसलिए अब स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध की पुरातन सामाजिकता
पूरा रही है। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध अर्थ विश्लेषण न रहकर बुत लकड़ी और वास्तविकता
के व्यक्तित्व पर है। अब नारी अपने में स्वतंत्र-वह न सती है, न वेदना। अर्थाती 
अब यह पुरुष की गोपन्य वस्तु नहीं है। यह केवल नारी है।

1. डा. हेमेनुद्दीम शाह, "स्वातंत्र्याधीनतारहिन्दीउपन्यासः पुरुष-लक्ष्मण", पृ. 156.
2. डा. गुरूस लिन्दर, "हिन्दीउपन्यास में नायिका की परिवर्तन", पृ. 212-213.
3. नेमियानन्द जैन, "अनुसूचीसाधारण", पृ. 144.
4. मोहिनी शर्मा, "स्वातंत्र्याधीनतारहिन्दीउपन्यासों में जीवन-पूर्वों का आकार", पृ. 395.
भारतीय समाज की आधुनिक नारी ने परम्परागत बल्लों को तोड़ दिया है। वह अब पति-परायण, तेजस्वी या जन्म-जन्म की दासी नहीं रह गई है। आज उसका अपना व्यविलय है, उसका अपना स्वातंत्र्य है। वह आज प्रदान के साथ-साथ आदर की अर्किता रखती है। यद्यपि परिवीर में आर्थिक रूप से उसे घर से बाहर निकालकर कार्य करने को विधि किया है। अतः आज वह माँ, पुत्री अथवा बहिन से न्यायता भी है। पुत्री का विवाह कराने में असमर्थ माता-पिता या पुत्री की कमाई पर रखनेवाले माता-पिता या बहिन की कमाई पर जीने-याले भाई अपना सम्मान को है। अब पुत्री पिता और भाई पर आधित्य ने रहकर घर की स्वायत्ती कम कर गई। "आधुनिक नारी नामुमकी रूप से और उससे न्यायता आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। उसकी आर्थिक स्वतंत्रें भाँति उसे आपसे लायक पुस्तक पढ़ने से बचा न होने की शक्ति दी है। यही कारण है कि परम्परागत विवाह-संस्कृत नकारा साक्षात होने लगी है।" ।

आज की नारी स्वालिक्षिणी बनकर रहना चाहती है। वह पुस्तक की अनुयात्री मात्र न रहकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति वाकरू है। आज नारी आत्म-निर्भर जीवन स्वयं अपना मार्ग निर्धारित करने लगी है। अपना जीवन-साथी उन्हों ने न चुनकर है लिए वह स्वतंत्र है। अधिकारित रहकर भी वह दिसी की ठीकर रह सकती है। इसलिए अगर वह अपने ने पुस्तक से किसी भी प्रकार हीन-अनुभव नहीं करती। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़कर उसने परम्परागत अलग के स्वयम्भू पर सब्बाला नारी के पृथ्वी की प्रतिभा की है। आधुनिक नारी अपने प्रति समाज की परम्परागत धाराओं को बटाल करने के लिए पृथ्वी साधिकों की पुस्तक है, "जीवन के प्रति जिंदगी में पुस्तक के साथ जीने के रंग का बिदायत, जिनकी नहीं, गलती की गायन नहीं है।" "घर की चार दिवारी में बना रहना, चौख-बरामों, खाना बनाना आदि किस अभावनव- सा

1. डॉ. भगवानदेव दास, "कहानी की तददनकीलता: तिस्तान्त और प्रयोग", प. 199.
2. डॉ. राजीव राघवा, "समालिन हिन्दी उपन्यास की प्रभिविक", प. 14.
स्वतंत्र भारत में श्री-पुख्य के सम्बन्ध में आज नया रूप है, जिसका लिया है।

आज पुख्य और श्रीको सम्बन्ध शासक और समस्या या स्वामी और दासी का नहीं, दो स्वतंत्रतावासी होते हैं।

पति-पत्नी के बीच उत्पन्न मानसिक हत्याओं एवं गुलियाहों के कारण श्री के मानस में "पति" और पुख्य के मानस में "पत्नी" का वह पुराना स्वभाव शिलित हो गया, "दोनों के ब्यक्तित्व पूर्णता की दोष में शिलित होते जा रहे हैं।"  ²
दाम्पत्य जीवन में स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध

संयुक्त परिवार के विभिन्न होने तथा व्यक्तित्व के आत्मकेर्निग्रह होने के परिस्थिति के परिवार का वह पुराना धर्म दफ्तर गया और नए मौर्य सिरे होने लगा । वहीं पति-पत्नी और उनके बच्चे ही हैं । ऐसे संदर्भ में दाम्पत्य जीवन के विविध पक्षों पर नए सिरे से तीव्र-विवाह अविभाज्य बन गया है । यथावत् "अपने पति-पत्नी की एक-दूसरी से अभी अपेक्षाएं रखते हैं। दोनों एक-दूसरे से शी तथा अपने दाम्पत्य जीवन से भी विचित्र इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षा रखते हैं।" ।

विवाहित जीवन में दो व्यक्तियों का शारीरिक संबंध की तब तक नहीं होता । पति-पत्नी दोनों को एक बनना चाहिए । लेकिन विवाह के बाद मानसिक तत्व के बाद पति-पत्नी अपने-अपने निर्माण को सही साबित करने के ब्रह्माण में एक-दूसरे से बत जाते हैं । अन्त में उनका सारा प्रयत्न गलत साबित हो जाते हैं । परिवार संबंध उनके दाम्पत्य जीवन में विवाह की प्रकृति संदर्भ होती है ।

1. डॉ. प्रमिला कपूर, "भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं", पृ. 11-12.
"आषाख का एक दिन" का कालिदास परिवेशिक विवाहार्ध राज-पुष्क्रियांसमेत से विकास कर रूप है। पर प्रति-प्रति के रूप में उन दोनों का जीवन पूर्ण तरह असफल होता है। क्योंकि जब भी कालिदास उपर्युक्तांकित है तब महिला का प्रतिकूल उसके सामने आता है। वहाँ रहने कालिदास ने जो कुछ लिखा है, वह तब महिला और उससे सम्बन्धित है। कालिदास का यह कथन उसके अन्त:मन की दुःखिता स्पष्ट करता है, "लोग सोचते हैं मैंने उस जीवन और वास-वर्ष में रहकर बहुत कुछ लिखा है। परन्तु मैं जानता हूँ कि मैं ने वहाँ रहकर कुछ नहीं लिखा। जो कुछ लिखा है वह यहाँ के जीवन का ही संचय था। "युम्बारसबह" की पृष्ठभंग यह हितार्थ है और तपस्विनी उसका हुम हो। "मेघदूत" के यक्ष की पीड़ा मेरी पीड़ा है और विरह - विनाशिता यात्रिणी हुम हो -यथापि मैं ने सब्य यहाँ लोने और तुम्हें नगर में देखने की कल्पना की। "अभिनवशापुत्र" में शान्तनु के रूप में तुम्हें मेरे सामने थी। मैं ने जब-जब लिखने का प्रयत्न किया तुम्हारे और अपने जीवन के इतिहास को फिर-फिर दोहराया। और जब उससे हटकर लिखना चाहता तो रचना प्राप्तवान् नहीं बना हुई है। "धुरांश" में अज का विलाप मेरी ही धेमण की अभिप्रेत है और .......

अतः अन्त में उह काम्मीर की राजस्थान को छोड़कर पुनः कालिदास बन जाने के लिये अपनी प्रेमिका महिला के पास लौट आता है। कालिदास को कवि का तत्कालिन के रूप में लेकर उसके अन्तमाग के बड़े नसों को पहचानने बात क्षमित्तथा।

के अभाव में कालिदास राजकीय खुश-सुनिश्चिताओं से हमेशा के लिए भाग जाता है।

गहरे प्रियघातकों और कालिदास पति-पत्नी बनने पर भी एक-दूसरे को समझने में असमर्थ निकलते हैं। इसलिए उनका समझना ही टूट जाता है। अतः वह मलिका ने प्रस्ताव उठाया जो उसकी प्रेमिका है। वही कालिदास को नहीं दंग से समझती है। पर वापस आए कालिदास ने महसूस किया कि उसकी समझ भी वास्तविक नहीं थी। इस आपत्ति नासमझी के अभाव में वे एक-दूसरे से कट जाते हैं। वह कालिदास-मलिका की विविधता भाव नहीं, बल्कि आधुनिक नर-नारी की भी है।

"लहरों के राजकोट" की झुंड़री अपने रूप-सीन्द्र से नन्द को बाँध रखने में अपनी अस्तित्व की सार्थकता समझती है। दीक्षा तेन्त्र और आध्यात्मिक जीवन शिष्यार्थी झुंड़री के खड़े में पागलन है। अतः खुश-भोग में आमन्त्रण झुंड़री नन्द को सांसारिकता की ओर ले जाना चाहती है। पर नन्द झुंड़री से पूर्णतः फिर भी नहीं सकता। क्योंकि नन्द है मन में अपने माई खुश के प्रति आदर है, प्रेम है।

इस प्रकार झुंड़री और खुश के बीच अथवा शौकिकता और आध्यात्मिकता के बीच फिरती। एक को पूर्ण शरीर से न अपनी तबाही की स्थिति में नन्द की विषंगति झुंड़री को चाहती है। इसलिए एक को स्वीकारने और दूसरे को नकारने की अनुभाव उसमें नहीं है। आगे बढ़ने के लिए इन्होंने कितनी एक के स्वीकार करने ही चाहिए। लेकिन नन्द इनमें होंगे एक को या दोनों को स्वीकारने या त्यागने में असफल निविड़ता है। वह झुंड़री के विचित्र और खुश के विविध भी खुश करने या कहने में असमर्थ है। इसलिए नन्द अम्बाबाई की दीक्षित किया जाता है। नन्द को देखकर झुंड़री चेतना है और अधिक उन्मादग्रस्त हो जाती है। वह कहती है, "वे
हरी हो, आपका, जो लौटकर आया है, वह व्यक्ति कोई दूसरा ही है ...।
ऐसी अवस्था में नन्द अपने को घराड़े पर बड़ा नंगा आदमी समझता है। अन्त में वह झुन्डरी को होड़कर चला जाता है। फिर वापस आला है। गोया कि उनमें भी एक-दूसरे को समझने की क्षमता नहीं। अलग-अलग मानसिकताओं परति-पतनी मिलने की अवस्था अद्वित अलग हो जाते हैं।

"आप अघ़ूरे" के महेन्द्र और साविकी की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं। वे भी एक साथ रहते पर भी एक-दूसरे से कोई दूर है। महेन्द्रजनाथ नाटक का नाम है। साथ ही बेकार, निराश एवं असफल पति है। अपनी बेरोजगारी की हालत में उसे अपनी पत्नी साविकी पर निर्भर रहना पड़ता है। इसी कारण पति के प्रति उसके मन में दिल्लिया उत्पन्न होती है। गृहस्थानी की हैसियत से उसको गिरा दिया जाता है और वह अपने ही घर में नौकर-सा बन जाता है।
साविकी और महेन्द्र के आपसी वर्तमान से यह स्थिति हो जाता है।

"स्त्री: यह अच्छा है कि दफ्तर से आजो, तो कोई घर पर दिखे ही नहीं रहें। जो गये ये तम 9"

पुस्तक एक: कही नहीं। यही बाहर तथा - मार्केट में।

इस प्रकार अपनी पत्नी के कठोर व्यवहार से आहट महेन्द्र अपने घर में अपने को एक कीड़ा की तरह महसूस करता है, "समय महसूस करता हूँ। मुझे पता है मैं एक कीड़ा हूँ, जिसने अन्दर ही अन्दर इस घर को बा लिया है।" इसलिए वह उस परिस्थिति से भागना चाहता है। उसकी कामना मात्र कामना ही रह जाती है। इस तरह राजेश ने महेन्द्र और साविकी के माध्यम से, दो विपरीत मानसिकताओं परति-पतनी के माध्यम से आधुनिक पति-पत्नी के अन्तर्गत को अनावृत्त करने का प्रयत्न किया है।

1. "लहरों के राजहंस", पृ. 100।
2. "अघ़ूरे", पृ. 14।
3. यही, पृ. 39।
"पैर तले की पृष्ठिना" के अयोक्त का दाम्पत्य जीवन भी परालित है। क्योंकि उसकी पत्नी सलमा वे एक डाक्टर का समान है वो उनके स्वस्थ वैवाहिक जीवन के विषय में कहता है। अतः अयोक्त पेंडिट से अपनी पत्नी के बारे में कहता है, "तेरी, कुछ रिश्ते खराब है। तेरे और मेरी बीबी के बीच एक कुछ गहरी बातें। डाक्टर मेरी बीबी का बचपन का दोस्त है। अब सबकी कुछ तुम 9"। जैसा कि हमें मालूम है कि दाम्पत्य जीवन को उत्पन्न रखने के लिए आन्तरिक सम्बन्धों में पुष्टता अनिवार्य है। पर जब अवरोधित घटनाओं पर ध्यान दिए तो यह पुष्टता सिक्किम की जाती है। अयोक्त को इसलिए अपनी पत्नी का एक कहिंतक का जाना है।

नाटक के मुख्य पांडित का तेरी अपना परिवार है। पत्नी है, घर है। पर उसकी पत्नी की तस्वीर दूसरों के बारे में बन्द है। अयोक्त के समान पेंडिट के लिए भी अपनी पत्नी कहिंतक का होता है। क्योंकि वह दोनों के कहता है, "मेरी दोस्ती । मेरी बीबी ! जो सीता के बारे में वाजुधु तेरा साथ दे सकती है।" 2

पर अविश्वास की बात यह है कि यह जानते हुए भी वह उस अवरोधित स्थिति से निपटने के लिए विद्यास है। इसलिए पेंडिट को भी "अयोक्ते-अयुरे" के में नदी के समान अपने घर के उस विषय के सम्बन्धि परिस्थितियों के साथ नक्सली समझौता करना पड़ता है। उसका कहता है, "कुछ था, जिससे मैं वह वक्त भागना वाहता था .... और यह व्हा इस हुन्नुन के साथ यहाँ आया था, तो भी भागकर इसी से भागकर इसी के साथ।" 3 समस्त दृष्टि के समान अयोक्त जीवन बिताने के लिए
पणितल ने हृदयम का आश्रय स्वीकार किया था। पर वह अपने प्रयत्न में सफल नहीं होता है और उसका दाम्पत्य जीवन भी हर तरफ से असफल निकलता है।

स्त्री-पुरुष-सम्बन्धों का एक नया धरती राक्षेश के उपन्यास "अन्येष्ठे बन्द कमरे" के हरबंस और नीलिमा द्वारा प्राप्त होता है। हरबंस और नीलिमा दोनों आधुनिक शिक्षित पति-पत्नी हैं। परत्यर निषट होने के प्रयास में दोनों एक-दूसरे से दूर होते हैं। हरबंस पहले नीलिमा को नृत्य सीखने को उकसाता है। पर जब वह इस क्षेत्र में आगे बढ़ती है तो हरबंस चिढ़ जाता है, विवेक उसका अपना महत्व धारण हुआ लगता है, "यह अपना प्रदर्शन करो, नाम करना और भी महत्व है। हमारी इस प्रार्थना है कि हम समझ सकते हैं और उसका वर्तमान अनुभव जीना है।" यद्यपि दोनों के आपत्ति सम्बन्ध में तनाव का आरम्भ होता है। ऐसा तनाव ने नेपियन्द्र जैन इस पुस्तक लिखते हैं, "आपने के बदल-से पतियों की भूमिका, प्रारम्भ में यही नीलिमा को नृत्य सीखने और व्यक्तिगत अनुभव के लिए प्रेरित करता है। नीलिमा को पहले अधिक लागती नहीं होती, पर जब वह अन्त में समय समय इस कार्य में सत मान लगती है, और अपने लिए एक अलग "कैरियर" की, निजी जीवन की, चाह करने लगती है और इस पुस्तक उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास होता है, तो हरबंस खोजने लगता है, उसके और नीलिमा के प्रकटर्क जीनने हो जाते हैं, दोनों के मूल्यों में संग्रह होने लगता है।

पति-पत्नी होते हुए भी हरबंस और नीलिमा में आपत्ति सम्बन्धी का अभाव है। इस अभाव का मूल कारण उनके प्रकटर्क जीनने का अन्तर है। दोनों

2. नेपियन्द्र जैन, "अद्वैत साक्षात्कार", पृ. 127.
के विचारों और मान्यताओं में बार-बार टकराव होती है। साथ-साथ मानवीय दंश चलता रहता है। इसलिए नीलिमा कहती है, "हमारा ब्याह है तीन साल हो गये, भगवान मैं तुम्हें आज़ाद कर देंगी।" । अंतिम जब उनके आपसी नियंत्रण बन जाता है तो हरबंस नीलिमा से नज़र बांटते हैं। इसलिए नीलिमा के साथ-साथ उन्हें चिल्डरन के बिना दोनों ही जिन्दगी मुझे असम्भव प्रतीत होती है। ।

इसलिए वह लन्दन पहुँचने के क्षण बाद नीलिमा को मार्गित पत्र लिखता है, "कितना अफसर होता पद वह कहता-पत्नी न होकर दो मिस्र होते और दो मिस्रों की तरह यह बात तय साथ-साथ करते।" पर बाद की बात यह है कि नीलिमा के लन्दन पहुँचने के बाद भी, उनके आपसी समस्याओं सिखे नहीं होता, अंतिम दो जाता है अर्थात टूट जाता है। इसलिए डॉ॰ इन्द्रनाथ मदन ने विख्यात किया है, "इन दोनों के अलग-अलग व्यक्तित्व हैं, अलग-अलग रचनात्मक हैं, अलग-अलग जीवन-गोष्ठ हैं।" इसे लेकर वे इस तरह स्पष्ट किया है कि वे एक बेरोजगार दो विवाहित दिनियों में घूमते चक्कर ये जो न उस घरे ते निकल लची ये और न ही अपनी दिशा बदल सकते ये।

आखिर नीलिमा सारे व्यक्तियों को तोड़कर हरबंस से कटकर चीना चाहती है, वहै कि वह महसूस करती है कि उसका "न होना" उसके "होने" से बेहतर है। इसलिए नीलिमा अपने गृह अश्लील के साथ जाना चाहती हैं, तो हरबंस करता है, "मैं जब और जब तक धरोहर चली जाता। .............. मगर लड़का तुम्हारे साथ नहीं जाएगा। यह नहीं कि मैं उसे रोकेंगा", मगर वह

1. "अन्यथा बनद जमरे", प. 84.
2. यही, प. 130.
3. यही, प. 141.
4. डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, "हिन्दी उपन्यास: एक नयी हस्तिन", प. 71.
जब ही तुम से कह देगा कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा २१° लेकिन आश्रय की बात यह है कि वे दोनों अलग रहना चाहते थे अलग नहीं हो पाते। इसलिए उनके लाभपूर्वक जीवन की गाड़ी दूर-दूर प्रैग-ैग-ैग चलती है।

राखे "न आनेवाला कल" उपन्यास के मनोज और शोभा के माध्यम से स्त्री-पुरुष-तम्बन्ध के और एक पहलू प्रस्तुत करते हैं। अपने मन की उदासी को दूर करने तथा एक नयी प्रेरणा की प्रतीक्षा में मनोज शोभा से शादी करता है। किन्तु शादी के पश्चात उसकी मानसिक पीड़ा बढ़ नहीं होती। सब-सबरी की बदलती दुख प्रकाश के खिलाफ उनके आयु-प्राय की और ने जाती है। यदि दोनों मन के बाद में परस्पर दूर जाते तो तुरंत शोभा के मुँह से "सौरी" शब्द मिलता पड़ता है। इसलिए मनोज को लगता है, "मेरे लिए वह किसी दूसरे की पत्नी थी, जिसके पर मैं एक बेहद अधिकार की तरह दिखा था।" इस विवेक के बाद के लिए मनोज सदा घर के बाहर रहते की ओर जाता है।

पति-पत्नी होते हुए भी मनोज और शोभा आनंद-अनन्त से रहते थे। अपने मानदंड के अनुसार शिक्षा तथा शोभा का बचत करने का वह आश्चर्य है। डॉ. श्रीमति अमृत तिर्थ की हृदि में, "शिक्षा अपने घर की जिस दृष्टि से चलाना चाहती है, उसमें एक प्रवास है, जीवन का घर है और है वैश्विक जीवन का रस।" दूसरी तरफ मनोज को भी एक घर की तलाश है, जो तही मायने में उसका अपना ही हो। लेकिन शोभा उसके इच्छा की

1. "अपरे बन्द कमरे", पृ. 421-422.
2. "न आनेवाला कल", पृ. 16.
3. डॉ. श्रीमति अमृत, "मोहन राखे: व्यक्तित्व और कृतित्व", पृ. 345.
पूर्वतः करने में असफल होती है। उसका कहना है, "मगर तुम महाराण क्यों करने के लिए वह नहीं था। या सिर्फ अपना आय क्यों करना पर-वर है, तिना कर-वर की गतिका के।" 1 अतएव दोनों अपनी-अपनी तलाश में पराजित होते रहते हैं। पलटः दोनों अभिनविप्र सामाजिक जीवन की धन्मण भी रहते हैं।

दाम्पत्य जीवन में अब कोई पावन लैंगिकता नहीं रहा गई है। प्रेमस्न कूल गया है। नित्य नक्सल पाने की इच्छा, जीवन को कहीं टिकाने नहीं दे रही है। अनुप्त वासना और अस्तित्व की समस्या ने पारस्परिक सम्बन्धों को तोड़ा है। "अन्तराण" की शाया अपने पति देव के व्यवहार से संतुष्ट नहीं है। वर्यान्त कि देव अपने पारिवारिक जीवन के पृष्ठ काफी सतहें है। फिर भी, शाया का लगता है कि उसकी दोस्तीं-देव पति के लिए प्रतिरोधित देव है, तब तक कि प्रतिरोधित देव दोनों स्वयंकार नहीं है। लेकिन लिखते हैं, "देव को जल्दी नींद आ जाती है और वह देव तक यह सोचती करवट बदलती रहती थी कि उसके शरीर को वास्तव में उसी का शरीर मानकर यह व्यक्ति उसके पास आता है या रोजु धर उसके लिए किसी न किसी और की शूकिता ही निम्नाल है।" 2

लेकिन अपनी शरीर के रूप सामके उपराणें देव की मृत्यु हो जाती है। तब शाया महसूस करती है कि रूम सामके पति के साथ रहने पर भी वह उनसे समझ नहीं पाती थी। शाया के शब्दों में, "अपनी जिन्दगी का युग रूम सामके में ये उस आदर्श के साथ बिताया था। तब तक उसकी भी उसके साथ अपने सम्बन्ध को दीवन-तीवन नहीं समझ पाती। वह मेरे लिए बहुत अलग है यह बहुत सामान्य आदर्श है।

1. "न आनेवाला कर", पृ. 126।
2. "अन्तराण", पृ. 149।
अपना इस विषय में मुझे अपने अन्दर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं मिलती हैं। 1 यहां भी समबन्धों की टूटने की नज़र आ रही है। आपसं समझ के अभाव में एक-दूसरे को दोनों की स्थिति में ज़िंदगी अभिव्यक्त लगना लागू है।

अपरिचित होने की स्थिति "एक और ज़िंदगी" में और बहुत है। कहानी के आरम्भ से ही ऐसा लगता है कि प्रकाश और बीना ने भयावह वर्षे एक बड़ी भारी गलती की है। दोनों अपनी-अपनी अत्यंतियों के कारण असुधित रहते हैं और अपने-अपने गहरी तुषिट वेल कारण परिस्थिति। वे एक-दूसरे की साथियों का आदर नहीं करते, एक-दूसरे के विचारों के विरोध के रूप में स्थान भी बना नहीं पाते। उनके जीवन में आनेवाला कड़ा तरह उन्हें एक वृह में बाढ़ नहीं लगता है, "बीना समझती थी कि इस तरह जान-बुझकर उसे कैसा दिया गया है और प्रकाश लोपला था कि अज्ञात भी ही उससे एक कंदर हो गया है।" 2 आखिर वे अपनी दैविक ज़िंदगी से अलग हो जाते हैं।

वेदांत प्रकाश एक और ज़िंदगी खुश करने के उद्देश्य से पूर्ण अपने एक मित्र की बहिन निर्माता के विवाह कर लेता है। पर शादी के बाद उसे मानव होता है यि वह यौन अर्थिक स्थिति। अतः उसके भी वह अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ सका। आखिर वह निराश होकर एक और ज़िंदगी की प्रतीक्षा में पहाड़ी की ओर चला जाता है। वहाँ पर संयोग से उसे अपनी परिभाषित नारी बनी।

1. "अन्तराल", पृ. 70-।

2. "वारित तथा अन्य कहानियां", "एक और ज़िंदगी", पृ. 16।
और उसके पुत्र मिल जाते हैं। प्रकाश पुत्र की बॉम पकड़ते हुए बीना से कहता है - “आप भी आ जाइए न।” किन्तु बेटे को देखता यह है कि टूटे हुए संबंधों दे दांवों को फिर से जोड़ने में प्रकाश असफल हो जाता है।

"गुंजल" टूटे हुए स्त्री-पुत्र-संबंधों की कहानी है। पति-पत्नी साथ-साथ वन्दन और चम्प रस्ते पर गुड़ नहीं पाते। एक ही सीट पर साथ-साथ बैठने पर भी, वे जिस तरह कि वह एक-दूसरे की तस्वीर देख सकते हैं, वैसे वे पति-पत्नी न होकर दो ऐसे बातचीत हैं, जिनका अभी तक आपस में पति पत्नी नहीं है। एक ही साथ पर तांबा-तांबा टूटे हुए, फिर भी एक-दूसरे के कीसों दूर रहकर। किसी गलतफर्श वे कारण दोनों दो समान्तर देखाओं की तरह आपे बदते जाते हैं। पति होने के नाते चन्दन अपनी गलतियों को मानने के लिए तैयार है। क्योंकि वह बीना-पालता है, अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करना मानता है। पर उसकी पत्नी किसी तरह के समझौते के लिए तैयार नहीं है। उसे निस्त्र की चिंता नहीं है। वह बहुत दूर "खुशजा" जाकर और बीना पालता है। इस तरह उनका दामप्लग जीवन पूरा। तरह टूट जाता है।

"फौलाड का आकाश" भी टूटे हुए दामप्लग जीवन की चन्दना की कहानी है। दस साल से अफत साथ रहने पर भी रवि और मीरा में आपसी नासभार है। पत्नी पति के लिए केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का सार्वजनिक होती है। रवि के साथ मीरा की पृथिवी निर्धार बन जाती है।

1. "वारिस तथा अन्य कहानियाँ", "गुंजल", पृ. 176.
दे सक औपचारिक एवं दृष्टिगणितीय विनियम चीतक ही है। पति-पत्नी को प्रस्तुत होने पर भी रचित मीरा से अपना एक नाम तकलीफ से करता है। इसके लिए हमें उदाहरण कहानी के आरम्भ से की छवितित्तित है। जब रचित विनियम का प्रयोग करना चाहिए तो वह कहता है, "देखो, हो सके तो...। देखो, कर सके तो...।" इस तरह की उपचारितता ही उनके टूटने का कारण है। प्रातः मीरा निरालित जीवन बिताने के लिए अभिनयों होती है। वह कहती है, "अनंतरंग से अनंतरंग क्षणों में भी मैं अपने को रचित से अलग, बिल्कुल अलग पाती है।" ॥ सन्नाटा जीवन बिताने एवं माँ दन्तन की आवश्यकता मीरा को नहीं हो जाती है। पर ध्यान देने की बात यह है कि उन दोनों का दामपत्य जीवन अपनी ओर से पर बिल्कुल साफ नहीं आता है, पर अंतरंग में वे कोई सूर हैं।

"अपरिचित" कहानी में दो अपरिचित व्यक्तियों की वैधातिक अनुमतियों के माध्यम से लेकर लग्जर्स्ट बनते हैं कि दामपत्य जीवन अनेक उलझनों एवं विवाहितियों से भरा है। पति-पत्नी एवं-हस्तर की प्रकृति और प्रतिकृति से अज्ञात रचित एवं-हस्तर की छोटी-छोटी हार्दिक पर बिगूंठे रहते हैं। सुध की नीचे उनके लिए हराम बन जाती है। पति-पत्नी-हस्तर के समस्याओं के कहानी का केंद्र भी नहीं लटकता। प्राचीन वेद में सर्व को कोई भी तरीके और रोकते हुए इस विषय को ठीकरे रहते हैं। देवों के दिखाओं में देवी स्नेही तो अपने तेंदुए विषय प्रकृति और आचरणवाले प्रति से नागर्ग हैं। और वही सामने के दुसरे भी अपनी पत्नी के आचरणों से अग्रसन हैं। इस आपसी समझौता के अभाव के कारण दोनों अपने दामपत्य जीवन में अस-फल होते हैं।

1. "फौलाड का आकाश", "फौलाड का आकाश", पृ. 69.
2. यही, पृ. 76. 
"खाली" कहानी में राकेश ने रस्म-पृथ्वी संबंधों की ऊंच, नीरसता और अलगाव की ओर प्रवाश डाला है। कहानी के पति-पत्नी जुगल और तोषी दोनों अलग-अलग व्यवहारक की तरह हैं। इसी कारण दोनों बनने के बदले बिगड़ जाते हैं। जुगल की "बाबाला" तोषी को पसंद नहीं है और जुगल को तोषी का रजन-सहन। यही कारण है कि जुगल को "हिरंदनी की हर चीज़ किसी बड़ह से गलत लगती है - और वह अंगर गर गलत चीज़ को ठीक करने के लिए क्या कर सकता था!"। तोषी जुगल की बातों से अपना मन हटाई रखना चाहती है। इसलिए वे टूटने के लगार पर पहुँचने पर भी, टूट नहीं पाते। अलगाव चाहते हुए भी, अलग नहीं हो पाते। दोनों के साथ-साथ रहने पर भी, वे निरंतर खाली हो जाते रहते हैं।

उपयुक्त उद्देशियों के अंतिराक कहानी की "महागिरे", "योगन", "गुनाह बेलजल", "अर्धिराम", "रास-टेक", "उसकी रोटी", "दोराहा" आदि कहानियों में भी दामप्ले-जीवन की नीरसता सं-टूटन का पदरिफास आ है। साथ ही वे जुड़े रहने के लिए अभिशप्त है। यही समकालीन जीवन की तासदी है।

सृष्टि-पृथ्वी-संबंध में तीसरे आदमी का प्रेम
पर तथा आस-पास के प्रत्येक में काम की आर्थिक। हम यदि हैं खुश घरों का बहन निम्नित्व करेंगे।" । मल्लिका के साथ हुए उसके व्यक्तित्व में प्रविशीथ 
की अवधारणा भी इलकिता है।

विलोम और मल्लिका का पारिवारिक जीवन भी और एक अवधारणा की उभरता है। वहाँ का लिखा की जाता उनके बीच व्यक्तित्व है।
इसलिए मल्लिका अपने कीवन को, अपनी संस्कृति को लोसती है, "यह मेरे अभाव की संस्कृति है। जो भाषा तुम्हें, वह दुःसरा नहीं हो सकता, परन्तु अभाव के कोष्ठ में कल्याण द्वारे की जाने कल्याण-कल्याण आकृतियाँ।" 2

"आये अष्टरे" की सारतिरिक अपने पति महेन्द्र से सत्यन नहीं होती, वहाँ वो उसकी दुःखित में वह एक अपरिस्थ पुस्तक है और उसका व्यक्तित्व 
अयसा है। इसलिए वह मनोहर, विंधकानिया, जगमोहन, जूनेला कार्टन कई 
पुस्तकें के संबंध जोड़ती है। अब्जों वहाँ में नातिनी जगमोहन के बीच के 
सम्बन्ध पर महेन्द्र यों व्यक्त करता है, "...... काफी अप्सरा आदर्श है। जगमोहन। और फिर से दिल्ली में उसका द्राक्षकर भी हो गया है। मिला 
था उस दिन कांड ठोल में। कह रहा था, आगे जो किसी तिन मिलने।" 3
आये वह सिंधानिया के बीच के सम्बन्ध पर यों विषयक करता है, "सिंधानिया 
इसका बोला। वह उसके आता शुल्क हुआ और अच्छा।" 4 सारतिरिक के पुलक 
फिरस्क ने जानते हुए थे, महेन्द्र इसलिए पुलकी साधता है कि सारतिरिक उसके 
लिये आदर्शी से व्यस्त दिन जुड़े थे।

1. "आषाढ़ का एक दिन", पृ. 76.
2. वही, पृ. 108.
4. वही, पृ. 33.
पूर्व पुर्ख की कला धारणा ने दी लाभिकी को भक्ता दिया और लड़ जुनेजा, सिवकीत, प्रभोक्तन आदि को इतालिए स्वीकार करती है। कि वे मेंदूत नाथ नहीं हैं। पुरुष चार हस वात की स्फट करता है। "प्रभु " पुरुष दिन जुनेजा एक भाषानी या तुम तार मने। तुमने कहा है तब हुम उसकी इजहार करने थी। पर आज उसके बारे में जो सोही को, यह मे अभी बता लुकी हो। जुनेजा के बाद जिससे पुरुष दिन चकाचौं रही हुम, वह या शिव-जीत। एक वफरी फिड़ी, बड़े बड़े शब्द और पूरी दुनिया जमाने का अनुभव। पर असल चीज़ वहीं कि वह जो था और ही दुर्गा था- मेंदूत नहीं था।" पर अन्त में लाभिकी महसूस करती है कि मेंदूत की अपूर्वता अन्य वफरी में भी व्यक्त है। अतः उसके तलाश अदुरी रह जाती है और वह अपने द्रामपत्य जीवन में बिलकुल असल हो जाती है।

"पैर लो की जमीन" की सलमा अयूब की पत्नी होती हुई भी उसकी नहीं हो पाती। क्योंकि सलमा के मन में अपने बच्चन है साथी एक डायेन के प्रति अनुराग है। शारीरिक हुप्तिट से तो वह अयूब की पत्नी है। पर मानसिक रूप से वह अयूब के डायेन है। इसलिए अयूब कहता है, "डायेन अपनी ही की सलमा को पाकर धम नहीं हो सका... उसी तरह उके में सलमा से भाषी करे..." अतः अयूब और सलमा का जीवन असल एवं तनावपूर्ण हो जाता है।

इस नाटक के प्रणिक और उसके पत्नी का जीवन भी अपनित हो युका है। क्योंकि उसकी पत्नी पर पहला का उसका नहीं, बल्कि हुमेहुन - वाला का है। यहाँ तक कि वह पदित की पत्नी की मात्र तथा अपनी

2. "पैर लो की जमीन", पृ. 60.
देखिए वहां घूमता है। पंडित के अंतर्गत की व्यवस्था इन शब्दों में स्पष्ट है,
“बीच में...” पर बीच में नहीं है...उसकी तस्वीर और उनके लड़कों में बना है।

विचार के पश्चात् पर-स्त्रियाँ के पृष्ठ परत का विवेचन लगाया
होना या अन्य पुरुषों के पृष्ठ परत का विवेचन लगाया दमारी अपनी संस्कृति
के अनुसार नहीं है। ऐसा होना स्वस्थ पारिवारिक जीवन के लिए घाटक
सिद्ध होता है। राखेश की “दोराहा” कहानी का कैसी अपनी पत्नी पूर्णिमा
के ज्यादा अपनी पुरानी सहली पद्धति की और अल्पकाल आकर्षित है।
इस-लिए वह शाहदा के बुलाने पर उसके यहाँ पहुँचता है। जब पूर्णिमा इस बात
से अक्षम हो जाती है तो उसके जीवन में दरारें शुक हो जाती हैं। लेकिन
कैसी पद्धति शाहदा के साथ अपने समर्थ की ओर इनकार करता है तो पूर्णिमा
साफ़ कहती है, “मैं ही नहीं, हमारे लिए मिल जाते हैं।” यहाँ से उनका
अपनी संबंध दूर जाता है।

इस पुस्तक राखेश के वनस्पत-बिगड़ते आधुनिक स्त्री-पुरुष सम्बन्धों
के विवेचन पहलूओं की उभारते हुए समस्याग्रस्त जीवन के मर्य तो पकड़ने का
कार्य उिक्षा है।

“सेवा” के आधार पर स्त्री-पुरुष सम्बन्ध

विचार ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की नैतिकतावादी मान्यताओं
बदल दी है। पुरुष और यौन सम्बन्धी परिवार वर विवाह आ गया।
अब यह आदिमता नहीं कि जिसके पुरुष हो, उसके विवाह भी और जिसके

1. "पैर तले की ज़मीन", पृ. 106.
2. "ब्राह्मण के छोटे", "दोराहा", पृ. 31.
विवाह हो उससे प्रेम भी। आज के यात्रिक मुम में भूमिकायार, अनायार, असफलता आदि से व्यक्ति अत्यधिक शर्त हो गया है। आधोनिकीकरण से उत्पन्न नई परिरिविधियों ने यौन समस्याखाना लोगों को बदलने में हो गया दिया है। क्या: सेवक समस्याखाना परिकल्पना बतलाती गयी। यौन समस्याखाना में काफी स्वतन्त्रता आ गयी। राढ़ी और पुल्ल आज स्वतंत्र रूप से यौन समस्याखाना में भाग लेते हैं। अलग-अलग कारणों से। राष्ट्र की रचनाओं की पृष्ठभूमि में सेवा छायी रहती है।

सेवक: विवाह की उपज

"आये-आये" की साक्षरित्रहृदय के बेंजुमकारी की स्थिति में, अपना घर संभालने के लिए कई पुक्कों से संबंध रखती है, "अगर मैं कुछ क्षति लोगों के साथ संबंध बनाकर रखना चाहती हूँ तो मेरे लिए नहीं, तुम लोगों के लिए।" सावित्री के पूर्ण पुक्क की तलाश की तरह में अपनी भौतिक आदर्शताओं की पृष्ठभूमि भी निर्धारित है। इसके लिए कई अन्य पुक्करों से यौन-समस्याखाना भी स्थापित करने के लिए तैयार हो जाती है।

यदि सावित्री आर्थिक विवाह के कारण कई पुक्कों से संबंध रखती है तो "खैर तोड़ की जमीन" के अयूब और इन्द्रधनुषका अपनी कामयाबता की पृष्ठभूमि के लिए कई दशकों से संबंध रखते हैं। अपनी प्रति में खुबकाले कामयाब रीता और नीरा का बलात्कार करने की कोशिश करता है। रीता के संबंध जोड़ने में वह सफल भी होता है। इस बारे को सफल करते हुए वह सलमा से कहता भी है, "उस बड़ी लड़की रीता। वह भी तुम्हारी ही तरह के कल्याणी बन रही है - क्योंकि उसका भोजापन, उसकी इन्नोमेंस भी मर गूँठी है।"

नीरा के साथ संबंध जोड़ने में असफल होने पर भी अयूब अब वह उनके

2. "खैर तोड़ की जमीन", पृ. 88.
साथ दुरा व्यवहार करता है। इस कारण नीरा बहुत दुखी है और उसे हर दीर्घ से हर लगता है। वह रीता से कहती है, "हर वीजु से। अन्येरे से, हम सबसे ... मुझे हमसे भी आज हर लग रहा है, दीदी। हम से भी। भक्ताते हुए वह अवश्य की आर फटी आँखों से देखती है और सबक वीजु पड़ती है। हम... हम दरिद्र है, दीदी...।"

हुशहुशाला एक कमीना आदमी है। क्योंकि उसने सैकड़ों लड़कियों पर अत्याचार किया है। यहाँ तक कि अपने छात्र भिन्न ब्यवहार की पत्नी के साथ बी म सम्बन्ध रखता है। उसके शब्दों में कहें तो, "मैं आज तक सैकड़ों जवान लड़कियों के साथ सोया हूँ... उनकी मर्जी से नहीं, अपनी मर्जी से। अपने दोस्तों के घरों को भी मैं ने नहीं छोड़ा।" 2 अपनी पत्नी के साथ हुशहुश का सम्बन्ध जानते हुए भी आर्थिक अभाव के कारण विधि घुप रहने के लिए विवश हो जाता है। क्योंकि वह "जिन्दा रह सकने के लिए नहीं, दूसरों की तरह जिन्दा रह सकने के लिए" 3 अपनी पत्नी को हुशहुश केरिए समर्पित करता है। यही अधिकतर आधुनिक मध्यवर्गीय लोगों की जास्ती है।

जिन्दा में एक रत्न का बौद्ध व्यवहार का शुभ है। अन्तः रामेश के "न अनेकात्मा कल" उपन्यास के मनोज सक्षेपन अपने दायर पर जीवन की नीतिता तथा फादर बिनान स्कूल के बदलाबाट वातावरण में असह के बीमार, तपन और घटन की यन्त्रणा को ड़ेल्टा है। अपने अन्दर के इस तथ्य को समर्पित करने के लिए वह बैठून, खाना, आदि कई लड़कियों के शारीरिक संबंध जोड़ने

1. "पैर तले की ज्वीन", पृ. 97.
की कोशिश करता है। उन स्त्रियों के उसका आकर्षण केवल तन का है, मन का नहीं। लेकिन सेवन की परिस्थिति और नैतिकता पर विश्वास न करने—वाली बाँटनी, काशीनगर वैश्विन्द्र स्त्रियों के आदरण में वास्तविक नारित्व नहीं है। बाँटनी की दृष्टि में, "जहाँ तक शरीर की नैतिकता का साधन है, उसे लेकर मेरे मन में कभी कोई पुंजा नहीं रही।" इसलिए वह अपने आकर्षण को दूर करने के लिए मनोज के साथ टहलने का कार्यक्रम बनाती है। हृदयारों को इस भी वह अपने पुंजाके फ़स्कर को नहीं बोगी। नैतिक शूलों की परवाह किये दिना वह आपुनिक नारी के रूप में मुक्त जीवन जीती है।

"चाहे पत्नी मेरे या सवत्तन, पर अपनी जितनी न मेरे, अपनी जवानी न चाहे।" एक आलोचना" कहानी इसी पर आधारित है। इसके दैनाचा नामक एक कालान्तर पुस्तक का विश्वास दिया गया है। उसे अपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए एक तरीक़े चुन्नत है। उसे अपनी मरी हुई पत्नी संतान की कोई खिण्ठण नहीं है। बुढ़ा जौ चुनने पर शी वह अपने बी जवान बना नहीं। उस शरीर को संपत्त कसी हुई शैले बहती है, "...... महाशय केलास भी अभी जवान है। तारा नर नहीं है कोई बात नहीं। नाली पर गया बी कोई खिण्ठण नहीं। जवानी तो नहीं मरी 9 अलः अपने जीवन में अकेले पुकार के तंग्षे के तांत्रिक वह स्त्री है अर्थों से साहित्य यो चाहता है।

स्त्री पुस्तक के कवितारों है। इसके लिए पुस्तक अपना सब कुछ अर्पित करने जो तैयार दो साल है। "एक आलोचना" के बैलास की तरह

2. "इन्सान के बाबूर", "एक आलोचना", पृ. 20.
“मिटटी है रेग” का महानन्द भी कामाक्षत है। अपने शिशु की मृत्यु के समय दी गयी अंगूठियाँ को नहीं सही जगह पुष्पाकुर्मा चाहता है। पर रास्ते में उसकी अंगूठी अतिरिक्त उसके आंखों में अति झालकर उसके होठों को तुम्हें देखती है और उसे एक रात-भर प्रेम देती है। तब महानन्द उन दोनों अंगूठियों निकालकर बड़े प्यार से उसे पटना देता है।

राकेश की “वातना की छाया में” नामक कहानी का बुद्धा जादू भी कामाक्षत पुरूष है। पुत्र पर सच्ची बेटी है, जिसकी उम्र तीस ताली की है। अश्विनी टूटने पर वह, वह देखने में लज्जा लगती है। शराबी और कामाक्षत टूटने के कारण जात अपनी बेटी के लिए एक योग्य वर की ठोसने की अपेक्षा अपने लिए एक घरवाली की तलाश करता है। इसी उद्देश्य से वह अपनी ज्यादा बेटी के साथ शहर आ जाता है। शहर में एक बाबू की तो उसकी मौट होती है। उससे बुद्धा जात अपने लिए एक घर बनानी की बात कहता है तो बाबूजी उसका योग्य करते हुए कहता है, “इस उम्मीद में कोई मिलेगी भी तो ऐसी ही मिलेगी सरदार जी, जो पहले वही घर में मृत्यु न देख सकता न हो। ऐसी को घर में दाल लोगे।”

पर बूटे की सिर्फ एक स्त्री की तुरंत है, वाही वह देखता भी कयाम है। उसकी राय में देखता ही उसकी धातना की पूर्ति कर सकती है। इसलिए बाबूजी के इनकार करने पर वह, वह उससे दूर करता है, “नहीं बाबूजी, भागेपास मृत्यु कोई है। मेरी पहली अपने पैरों पर समझो और

１．“बाजुरा और बाजुरा; वातना की छाया में”, पृ. 77।
मेरा काम करा दो। दो-घार सो मैं आपके सिर पर जार दूंगा। एक बार अपने पुढ़े से कह दो कि है।” मगर काली तसफ हनकार करते हुए कहता है, ‘मैं किसी को नहीं जानता सरलार जी।’

आखिर वृद्धा एक नई उम्मीद रखकर, अपनी बेटी के बदले में और विस्तर तन्त्र की तलाश में अपने गांव की ओर जाने को तैयार करता है। वह कहता है, "सबी मे, हम उसे अपने गांव जा रहे है। यहाँ अब किसी भरोसे सैतर रहें दो यहाँ चलकर देखभाल करें। और नहीं तो बदले में ही कोई लड़की देखें।..." यहाँ काम-वासना का नगन चित्रण पाठकों के सामने आ जाता है।

"एक आलोचना" के कैलास और "वासना की भाया में" के वृद्धा जात की तरह "हक खाल" का पंडित भी अपनी युवावस्था को बीत बुका है। पर वृद्धा को यूकने पर भी घे तीनों शेख के संसार में चककर लगाते है। पंडित की उम्मीद की तलाश करते हुए लेखक लिखते हैं, "मैं ने दूगे हुए घात में के पीछे उसकी आर्किस को देखा, और युके लगाने की धारिया की जिनती करने का गोष्ट अर्थ नहीं, उस की स्थिरता हुए बुकाया है।" फिर भी वह वेक्स की दुस्सिख में घूमता रहता है। पैसा देने के बेनी की उम्मीद कन्याओं को पत्तियों के रूप में शादी करता है। वह कहता है, "बहरार पैसे पास में हो जाए तभी तो होता है बाढ़। हमारे यहाँ लड़की की केंद्र नले है। यह मैं ने केवल ती स्थाय देकर बाढ़ नियंत्री थी।" जब उसकी पत्नी और छोटे का भाग जाती है तो वह अपनी साली को ही अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिए अपने पास रख देता है।

1. "भान्नर और जानवर", "वासना की भाया में", पृ. 79.
2. यही, पृ. 79.
3. यही, पृ. 79.
4. "वारित तथा अन्य कहानियाँ", "हक खाल", पृ. 147.
5. यही, पृ. 150.
राखेल की "झिल्लू" भी कामाक्षत पुस्तक का चित्रण करती है। बौढ़ विहार में रहते समय वहां के सब लोगों को नियमानुसार परस्पर माई-बहनों के तरह ल्यावहार करना घातित। पर झिल्लू संभाित झिल्लूनी तारा की ओर आकर्षित होता है। पर तारा उसे अपना माई ही समझती है। यददिन रात्रि को कामाक्षत संभाित तारा के दोनों हाथ पकड़कर उसे बलात्कार करने की कोशिश करता है। पर इसी की जिष्य झिल्लूज़य माई अतर उसकी रक्षा करता है। पर बाद में झिल्लूज़य भी तारा के सौन्दर्य पर आकृति होता है। तारा बज्जे "झैया" तहत पुकारती है तो उसे इस पुकार की पुकार अपनी नहीं लगती। लेखक का कहना है, "झिल्लूज़य ने तारा की ओखल में देखा। तारा ने उन आईं में वातना की विराजमान रूप देखा। राखेल की एक दिन उसने संभाित की ओखल में देखा। वह दर साहाय। वह बुढ़ी के जब उसके और वहां से बड़ी गई।" ।

"काला रोज़मरी" को सिद्धास्नान आर्थिक अभाय के कारण अपने तथा अपनी माई का पेट भरने के लिए शरीर देखने को विकश्य हो जाती है। "आधिक सामान" का मिस्टर शंकारी आर्थिक आर्थिक जैसे कामों के लिए अपनी पत्नी को अपने उच्च आर्थिक लाभ रखने के लिए कि ती की बात वातना की पूर्णता के लिए किसी परायाय स्थिति को मुनाफ़ा कर लेता है। "मिस्टर शंकारी के कपड़े अंगठी रखने उन्हें महसूस होता था कि उनमें किसी परायाय शरीर की गंभीर आवश्यकता है और वह रखा-साड़े एक-सी नहीं होती थी।" ।

"जानवर और जानवर" का फादर फिकार अपनी सत्ता के बल पर अपने सूंक की अध्यानिक पृथक सम्बन्ध रखता है। लेखक कहते हैं कि अंट तैली को फादर इसलिए निलंबित देता है कि वह फादर की वातना की उत्तत नहीं करती। उसके स्थान पर अपने ही अंतिम फादर की शिकार बन जाती है।

1. "एक कठना तथा अन्य कहानियाँ", "झिल्लू", पृ. 24
2. "जानवर और जानवर", "आधिक सामान", पृ. 102.
अपने तथा अपने परिवार का कारण अपने महिला की नारियों बाहर जाकर नींव रखने के लिए विद्यालय ही जाती है। लेकिन कामाक्षियों इक्कियों इस आर्थिक विषय का लाभ उठाते हैं। आर्थिक नारी की अपनी आर्थिक दुरुस्त के लिए अपना शरीर तक बचना पड़ता है। इस प्रकार “जानवर और जानवर” की अनीता युवर्जी फादर की शिकार हो जाती है। वह मैदिने बनकर अधिक आर्थिक वित्त कमाने के लिए फादर से आनंदित सम्बन्ध बनाती है।

रेपल: स्वेच्छा की कुलज

मोहन कुलज की कुलज रचना में स्वेच्छा से लिये गये “सेक्स” का धिक्र देखने की मिलता है। उनके नाटक “पीर तले की ज़मीन” की सलमा शादी के बाद भी अपने बचपन के लाड़ी डॉक्टर के स्वेच्छा से सम्बन्ध रखती है। अन्य इस बात को सयरंप करता है, “डॉक्टर जो मिलता मेरी बढ़ियी जानती है, उतना ज्यादा था और कोई नहीं जानता। यह डॉक्टर और मैं—हम दोनों एक मोहले में रहे हैं, एक कालेज में पढ़ा है और एक ही...” सलमा के इस अनैतिक सम्बन्ध के कारण उनका दमकल के जीवन तमाशापूर्ण हो जाता है।

“सेक्स फिल्म” की मिशेल सिन्ट भी स्वेच्छा से कई पुरुषों से सम्बन्ध रखती है। वह काफी उम्र है और सदा ऋतु—ऋतु बारे करके पुरुषों को अपने दोश में कर देती है। क्योंकि पदार्थ के दिनों में उसके कई “बॉयफ्रेंड” थे। हादसन उसका एक “बॉयफ्रेंड” था। वह उसे अपनी साइकिल पर चालक का मालय करता था। पहले की तरफ आज भी मिशेल सिन्ट में कोई कह नहीं है। वहुस्त्र की तरफ़ वह पुरुषों को बदलता है। उसका विश्व विद्यापीठ देती हुई, जाना बहती है, “यह

1. "पीर तले की ज़मीन", पृ. 42.
सुदर्शन की एक्स-फिल्म है। तब से अब तक कितना पर्स्व आ गया है इसमें। उन दिनों सुदर्शन इसे अपनी यात्रा किया था। विवाह के बिना कुछ ने जाया करता था। अपनी दोस्ती से हिंदू मत से कम किसी से शादी नहीं करनी। सुदर्शन के अलावा और वह कई बाह्य-प्रेम थे। इस दिन, एक सिफारिश की थी कि अपनी कोई बात भी नहीं कहनी। सुदर्शन ने अपने सब लय-अंकुश दिखाया करता थी। यहाँ तक कि अज तेज है आपने शमशेर में किसी को बुला रखा है, इसलिए हमारे साथ नहीं जा सकती।... उम्मा नाम है इसका। उह-सात साल हुए सुदर्शन ने बताया था कि किसी अदलाली साल के जागीदार मेजुर से इसने शादी कर ली है।... तीसरी शादी। इसकी यह तीसरी शादी है और मेजुर की हूसरी।” जाहिर है कि यह सिन्ख उन आधुनिक सिस्टर्स का प्रशिक्षण करती है, जो स्वेच्छा से कई पुस्तकें अपनी पुंजन प्रतिबन्धित करती है।

इस पुस्तक के राकेश की अध्यक्ष स्त्री-पात्र जहाँ आधिकारिक अभाव के कारण कामाक्षत पुलिस की सिक्कर बन जाती है तो वहाँ कुछ पात्र स्वेच्छा से स्वतंत्र लेख की हुक्याया में दिख कर रही है।

आधुनिक धरातल और स्त्री-पुलिस सम्बन्ध

आज “अर्थ” को समस्त सम्बन्धों का केन्द्र-भिन्न मान लिया गया है। आधुनिक उपन्यास में “अर्थ” दर्शन की प्रतिष्ठा का, सामाजिक विषय का मायदंड हो गया है। मानव के तस्मीख विषय-क्षेत्रों की, अच्छे-बुरे की कहानी नैतिकता न होकर “अर्थ”बन गया है। पति-पत्नी के सम्बन्धों के टुटने तक का एक प्रमुख कारण “अर्थ” है। यह गया है। “आज जीवन और जगत के सभी मूल्य अर्थ में तिमिट आये हैं और आधुनिक मूल्य एकाधिक जीवन मूल्य बन बैठे हैं।”

1. “फौलाद का आकाश”, “सेक्टी पिन”, पृ 108।
2. डॉ. रघुवीर रागा, “साहित्यिक साकारक”, पृ 57।
"आप अधूरे" का महेन्द्रनाथ सालों तक पर संबंधित ने के बाद जब आर्थिक मुसीबतों में बुरी तरह पैसा जाता है तो उसकी पत्नी साधित्री बहुत कहीं हो जाती है। अब वह महेन्द्र सहा उसकी उपस्थिति से नफुस करती है। सिर्फ साधित्री के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी संतानों के लिए भी गहेन्द्र नाला- यथा बन जाता है। हर कोई उससे निन्दापूर्ण द्यवहार करता है। अपनी ही घर में मालिक होने पर भी उसकी हालत नौकर के समान है। इसके अनेक उदाहरण इस नाटक में मिलते हैं। जब छोटी लड़की बाण माँगती है तो साधित्री महेन्द्र से पूछती है। "तुम उठ रहे हो या माँके?" अगे अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए महेन्द्र कहता है, "यहाँ कि मले देखो यही मुझे उठाते देखा से बात करता है।"

जब साधित्री घर के टुटने की सारी चिंतावश्वरी महेन्द्रपर थोप देती है तो वह प्रभु करता है, "छुटें की तरफ इसारा करके। यद आज तक बेकार करो गूड़ रहा है? मेरी बजह से। बड़ी लड़की की तरफ इसारा करके। यह बिना बताये एक रात घर से क्यों श्राप गयी की? मेरी बजह से। इससे की बिल्कुल साने आकर और तुम भी ... तुम भी इतने सातों से क्यों चाहती रही हो कि ..." इस प्रकार आर्थिक विवाहा के कारण एक-दूसरे से सिमाधित होने वाले वैमिवार का पूरा चित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

आर्थिक विवाह के कारण एक व्यक्ति किस हद तक दूरसे का गुलाम बन जाता है, उसका मार्गिक चित्र "वैर तो की जीवन" के प्रणित के द्वारा हुआ है। प्रणित जीवन-ग्रह आर्थिक अभाव के कारण हुनमानवाला की खामा में रहा। उसका पर हुनमानवाला के लिए हर समय हुआ था। वह अपनी पत्नी की हुनमानवाला को समर्थित करते उसकी जीवन से अनुसार अपनी जिन्दगी को आगे बढ़ाता है। इस कारण वह सबसे अपने घर में नयंजय जीवन बिताता है।

1. "आपे अधूरे", पृ. 310.
2. यहीं, पृ. 38.
3. यहीं, पृ. 39.
राकेश के "अन्तराल" उपन्यास की श्राब्धाल और उसके पति देव सबे उसके परिवारवालों का सम्बन्ध केवल बातें पर ही दिखा है। वैसे की लालग के कारण देव अपनी पत्नी श्राब्धाल से सम्बन्ध नहीं रख नहीं पाता।

ऐसी स्थिति में देव की मुलुक हो जाती है। तत्परतात देव के इक्ष्वाकुजार श्राब्धाल सास सीमा और ननद बीजी की आर्थिक सहायता देती है। पर उनका भी सम्बन्ध केवल बातें का ही है। बीजी हेमसा श्राब्धाल से घृणा करती है मगर उसके लिए पर सराह करती है। लेकिन नेहरू लिखते हैं, "फ्लैट और उनकी शैक्षिक, ये दो बातें थी, जिन्हें लेकर उसके सामने छोटी पड़ जाती थी।" वैसे के अन्तर्निक नहीं समझा और बीजी का श्राब्धाल से लगात या और न ही श्राब्धाल को उसके। इस प्रकार राकेश ने घरों "अर्थ" के आधार ने स्त्री-पुँख सम्बन्धों का पदार्पण किया है।

दाम्पत्य जीवन में सन्तान का बड़ा महत्त्व है। सन्तान उन्हें बाँध भी रखती है। परन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पति सन्तान नहीं चाहता और पत्नी भांटूल के बिना स्वयं को अपुरा समझती है। राकेश की कहानी "शूक्ल गिसेन" की मनोरमा मातृत्व के लिए आवश्यक है। लेकिन उस के पति दुष्किल बच्चा नहीं साक्त। क्योंकि शूरिल के उमर बहुत ही प्रीत चिन्मयारियाँ हैं। खड़ीक की दायग करानी है, पूरी शादी चलानी है।

इसके लिए काफी समय बच्चे हो जाते हैं। पति की आर्थिक विधाना के कारण मनोरमा को अलग जाने नौकरी लेकर वैसा इकट्ठा करना पड़ता है। आर्थिक स्थिता तक उसे अपनी मातृत्व भावना को लवा रखना पड़ता है। शूक्ल गिसेन होने पर भी मातृत्व से वंधित हो जाना मनोरमा के जीवन की बात है।

पृ. 1410
"बनिया बनाम इरक" में भी दूसरे हुए रत्नी-मुलब सम्भव की अभिव्यक्ति हुई है। कहानी का इन्हु नायनेवाली एक केशवा की लड़की से प्यार करता है। इसलिए वह उसे अपनी रक्षा बनाकर रखना चाहता है। इसके लिए वह कर महिला पॉज़ से खर्च करने को तैयार है। पर वह लड़की अपने द्वार से मर्दी महिला मांगती है। यह शुद्ध इन्हु नायनेवाली को जाता है और कहता है, "औरत जात प्यार की कटू नहीं कर सकती।" आजीव वह निरीक्ष होकर अपना पर लॉट जाता है। द्वंद्व की विकार स्थिति की ओर लेख के यहाँ इशारा की है।

दून का मोह आज भारे समाज को नैतिक पतन की ओर बोल देता है। नैतिकता यहाँ तक गिर जाती है कि ख्यातिम क्यंवित न रहकर सिर्फ सामान बन जाता है। ऐसी हालत में वह अपनी दुखाओं की पूर्ति के लिए अपनी पत्नी तक की खोज करता है। फिर अपनी वचन की पूर्ति के लिए परियों स्त्री को अपनाता है। यहाँ "आजीव के मित्रों" के मिस्टर ब्रह्मचारी की स्थिति भी इसके भिन्न नहीं हैं। वह पदकम्प्लेक्ट्स प्राप्त करने के लिए अपनी पत्नी की किसी भी अभिव्यक्ति को गेंद कर देता है। और कुछ परियों की स्त्रियाँ के साथ रातों कौटता है। पर जब वह अपने नैतिक द्वारकार के लिए पकड़ जाता है तब उसके पास न जुज्जुल है, न धन, न पत्नी कोई भी नहीं रह जाता है। इस पृष्ठ "अर्थ" की शब्द हुई नहीं है। उसके परे कुछ है मानवीय सम्भव के मुख्य लक्ष्मी-कभी यह शुल्क जाता है।

ट्री-पृख-सम्भव में अभिव्यक्ति की भावना

अभिव्यक्ति की भावना अद्वैत युग के विद्वय रत्नी-पृखों की मार्मिक समस्या बन गई है। अभिव्यक्ति स्वार्थ चिन्तन नहीं, बल्कि ख्याति

1. "एक घटना तथा अन्य कहानियाँ", "बनिया बनाम इरक", पृ. 74.
की सौंप्तकीय एवं वैदिक अवबोध का परिप्रेक्ष्य है। उसके अनुसार यह अपने
व्यक्तित्व की परिकल्पना करता है। उस व्यक्तित्व को बनाने रखने के लिए
यह निरन्तर संपर्क संभाल रहता है। किसी भी परिस्थिति में यह अपने अलग
व्यक्तित्व की या अस्थिता की समझौता करना नहीं चाहता। अपनी अस्थिता
को बनाए रखने का संघर्ष की यह अपनी जिंदगी की सार्थकता करता है।
राघव का व्यक्ति एवं रचनाकार इस अस्थिता से बेहद संख्यात्मक रहता है। "राघव
में एक जबर्दस्त आई हेशा रहता है। वह कहीं भी उपेक्षित नहीं रहता। चाहे
या साथ हो। चाहे घर से बाहर, चाहे लेख के रूप में
अपना एक भुना देना उसकी समझ में नहीं था।" राघव की सभी रचनाओं
के अस्थिता का यह बोध विविष्य रहता है।

"आराधना का एक दिन" की मलिका के लिए दिलों में एक अस्थिता
अतिथि उल्लिखित है कि मलिका की अस्थिता दिलों के लिए
तैयार नहीं। "आय दिलों, आप अपनी रीति से आगे जाकर बात कर रहे हैं
में कहीं नहीं हैं, अपना भला-भुरा तब समझती हैं।... आप समझते थे यह अनु-
भव नहीं कर रहे कि आप यह समय एक अनचाहे अतिथि के
रूप में उपस्थित हैं।" 2

मलिका के तरह "लहरों के राजकंप" की सुन्दरी की श्री
अपनी अस्थिता का रोकान है। वह अपने सौंदर्य पर पुस्त को वांछ रखने
में अपनी अस्थिता को सार्थक प्राप्ति है। इसलिए वह रानी यशोधरा की
भिक्षुणी बनने के दिन में दी कामोत्सव का आयोजन करती है। सुन्दरी के
गत में बुद्ध का दीक्षित होना यशोधरा की असमर्थता का
परिवर्तन है। "राजकुमारियां सिद्धार्थ आज गौतम बुद्ध बनकर आये, उसका श्रेय
भी देनी यशोधरा
को है।" आये वह अलका से बात करने बुद्ध कहते हैं, "नारी का आरक्षण
1. डॉ. गिरीश राघव, "मोटर राइटर और उनके नाटक", पृ. 42-43.
2. "आराधना का एक दिन", पृ. 42.
3. "लहरों के राजकंप", पृ. 34.
पुस्त को पुस्त बनाता है तो उसका अपक्षण उसे सौंतम हुझइ बना देता है। इसके वह अपनी मानसिकता, झूठि एवं भौतिकता का सम्भवन करने का का हो प्रयत्न करती है।

"अहे-अपूरे" की सावित्री मध्ययोगि स्थितियों का प्रतिनिधित्व करती है। अपने पति के आर्थिक अभाव तथा बैंकेऽ की स्थिति से उत्पन्न प्रतिगुंण परिस्थिति ही नहीं, वह रूपरेखा अपने अन्तर्गत की आबिलामा की संपूर्णता में सेल्फन रहती है। उसे अपनी अस्थिता ही प्रमुख है। इसके किती से वह समझता है कि कर सकती, पति से भी। वह अपने पति की कौनसी के तीन समझती है। पत्नी के अन्तर्गत संबंधों के आशा सेल्फन जब उसके कुछ प्रयत्न करता है तो सावित्री उसकी मिनदा करती है, जैसे -

'पुस्त एक चर बात तो मेरे ही घर की हो रही है।' 

'पुस्त एक चर ते मेरे पर नहीं है यह 9 कह दो, नहीं है।' 

'पुस्त एक चर अपना घर समझते इसे, तो ...' ²

राकृष्ण के उपन्यास "अहे-अपूरे" के हरबांत और भौलिमा होने अपने पति ने अस्थिता की लाभ में सेल्फन है। पति होने के नाते हरबांत अपनी पत्नी भौलिमा को अपना अधीन रखना घायल है। लेकिन जब भौलिमा अपनी महत्वपूर्ण के साथ हरबांत की छड़ा के विषय "भयना-दधंक" का प्रयत्न करना घायल है तो वह उसे यह कार्य से मना करता है।

1. "शराब" के राजबांल", पृ. 35.  
2. "शराब-अपूरे" , पृ. 28.
क्योंकि वह पत्नी की उपलब्धि को, उसके स्वतंत्र त्योहार के दिवस को
सह नहीं बांटा है। नीलिमा के शब्दों में, "लोग मुझे हम से प्रयाद जानते
है और उन्होंने जो बात छोड़ी है, वह हमारे दिल में न होकर गई हैं
में छोड़ी है। तुम्हें यह बात बता दी है कि लोग हमारी चर्चा नीलिमा
के पाप के रूप में रखते हैं। तुम्हें बता दी है कि मेरा प्रदर्शन सफल हुआ तो
लोग मुझे और ज्यादा जानने लगे और हम अपने नो और छोटा महसूस करते
"।

हरबंस और नीलिमा की आकृष्टियाँ मिलन होने पर ही नहीं,
एक-दूसरे की भावना को तमामने एवं सह समझकर के साथ को अपना न सहने
के कारण दोनों दिखाई देते हैं। इसलिए हरबंस कहता है, "जिस घर
में मैं रहता हूँ, वह मेरा घर नहीं है और जिस में अपनी पत्नी समझता
हूँ, वह मेरी पत्नी नहीं है।" आसिर हरबंस अपने अंदर पर मन को घोड़े के साथ
मनन करता जाता है।

नीलिमा में भी उन की भावना उपस्थित है। पत्नी होने पर
भी वह हरबंस के नियम में रहना नहीं चाहती। वह अपना अधिकार
घाटता है। जब हरबंस भाविक को उसके अनैतिक चिल्डर के कारण अपने
घर आने-लाने से रोकता है तो नीलिमा इस पर सफल नहीं उठती है। वह
पूछती है, "उस घर में किसी को आने-लाने के लिए वाला वह फौज है? उन
को वह कहती है। मैं एक चीज़ नहीं, एक दृढ़ता है और तभी वह अपनी बृहत
है। और अह जब मुझे पता चल गया है कि मेरी बृहते जिन्दगी-भर पूरी
नहीं होती, तो मैं उसकी ज्यादता का सामान बनकर सिखाता नहीं रहा कानूनी। के।
आसिर बह अपने पाप के अलग होने पर भी अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति

1. "अन्येरे बने करे", पृ.419
2. यही, पृ.104।
3. यही, पृ.103।
4. यही, पृ.511।
केलिंग कला की अनुस्मरण में प्रेम करते हैं। ये सब उसके अभवादी व्यक्तित्व के लक्षण ही हैं।

"न अनेकानां कल" के नौशर तकलीफ़ा और शोभा दोनों अपने व्यक्तित्व लिए हुए हैं। उसी कारण दोनों अपने व्यक्तित्व ही जाते हैं। जब इनके मनोज को अपने उस पर चूट लगाता है, तो वह उसी ध्यान किती निर्भर पर पहुँच जाता है। उसने फा कितना ही यहाँ कर्म न हो। यही कारण है कि वह स्वीकार के क्षमार्पण यातायात से अवाक इस्तीफा देता है। एक नई प्रीतकी की प्रतीक्षा में शोभा से शादी कर सेवा है। उसके व्यक्तित्व को सब अभवग देने पड़ता है। अन्तर से पराजित होने पर भी, वह इसी रूप से दूसरे के समक्ष अपने को स्वस्थ दिखाने का प्रयत्न करता है। इसलिए वह कहता है, "युग भर में जितना गुलाम आता था, बाहर में उतने ही कोमल टंग से बात करता था।"

दूसरी तरफ़ शोभा में भी अभवग की भावना है। ज्योंकि वह अपने दंग से शादी के बाद भी स्वतंत्र जीवन दिखाती है। "शोभा अपने दंग की स्त्री है। उसके जीवन का अपना दंग है। खान-प्यान, रहन-स्थान, वेदन-शुभा, स्वयं-जीवन और जीवन के सभी अवसरों में वह अपने दंग के जीवन पसंद करती है।" यही अभवादी स्वस्थ व्यक्तित्व ही उसके दूसरे जीवन का कारण बना।

"जब" कहानी में राकेश ने एक ऐसे व्यक्ति है जिसकी को चिह्नित किया है, जिसका अभवग बहुत प्रकार है। लोकगारी और लोकगारी की स्थिति को वह पहर करता है। पर इन दोनों स्थितियों में वह किती के साथ अपना

1. "न अनेकानां कल", पृ. 17.
2. डॉ. शशि अग्रवाल, "मोहन राकेश: व्यक्तित्व और कृतित्व", पृ. 344.
सिर हुकाना नहीं चाहता। जब तक उसकी नौकरी लगी रहती है, तब वह कहता है, "नहीं, मैं तुम्हारे हीरे को तरह नहीं जी सकता…… मैं अपने दक्षत का हिसाब नहीं, उसका निराशाहान हूँ। मैं जीता नहीं, देखता हूँ…… क्योंकि जीना अपने में बहुत घटिया चीज़ है। जीने के नाम पर तो पेड़-पाँधे भी जीते हैं, पुष्प-पत्ती भी जीते हैं।" ¹

पर जब उसे लम्बी बैकारी के दौर से गुज़रना पड़ा तो उसकी सारी अभिलापाँ छिन-मिन हो जाती हैं। वह अपनी व्यवहार गो प्रकट करता है।

"मुझे समझ आ रहा है कि मैं बिस्कूट कश गया हूँ ... हर वीचू से बहुत दुर हो गया हूँ।" ² यदापि अपनी बैकारी के दौरान सबसे कट जाना स्वाभाविक है, तो भी उसका अन्य उसे हुकमें नहीं देता है। जब कि वह कहता है, "पर इतना तुम्हें फिर बताई ही कि मुझे कम-से-कम बीस साल और जीना है। तुम्हारे या दूसरे लोगों के बारे में मैं नहीं कह सकता…… पर अपने बारे में कह सकता हूँ कि मुझे जुरू जीना है।" ³ अपने "स्व" पर वह इतना अभिग है कि वह कहीं भी किसी भी परिस्थिति में अपने "स्व" की भावना को छोड़ देना नहीं चाहता। वैसे रास्ते के हर पार में अपनी अर्थिता की तलाश उसके लिए निरंतर संघर्ष की पुष्टि दिखाई पड़ती है, जो आयुष्मान रूप में अपनी ज्यादत समस्या वन गुढ़ी है।

रत्नि-पुष्क-सम्बन्ध में श्रव-भोग की समस्या

पादचाल्य प्रभाव, अभिलाप शिक्षा, वैज्ञानिक आधिकार, आयोगी-कीर्ति, तकनीकी विकास आदि ने जीवन की पुरानी व्याख्यायें को बदल दिया।

¹. "कौला दा आकाश", "जहर", पृ. 122।
². वही, पृ. 122।
³. वही, पृ. 126।
है। इसलिए आत्मनिर्भर परिवेश में सुख-मुखिया की लालसा सबसे अधिक बढ़ी है और इस बदतमी हुई समस्या को पूर्ण करने के लिए आज के स्नी-पुरख भ्रात रहे हैं । लेकिन बढ़ते सारे पृथ्वीय के बाह्य उनकी मनोकामना पूरी होती-नहीं।

बाहर से वे प्रसन्न होते हुए भी, भीतर की भीतर वे घुट रहे हैं। उनके जीवन में प्रायः एक घुटन, टूटन, रिवतला, विक्रोध, आँखता आदि दर्शित होते हैं। राजेश के अथित्तिया राज सुख-भोग की लालसा में लीन होकर इसके निकाय हुए हैं।

"आधार का एक दिन" का कालिदास जब उज्जवली का राजकार्य

दो जाता है तब से उसके मन में सुख-भोग की लालसा उत्थान होती है। वह

शैव भक्ति श्रीसोपी में अपनी प्रेमसी मलिता को धूल जाता है। राजपुत्री श्रीरंग

से दिवाकर करके कार्यक्षेत्र का बस्तक बन जाता है। लेकिन राजस्व शैव राजकार्य

का जीवन उसके सुख-भोग के प्रतिकल रहता है। अतः वह कहता है, "किसी और

के लिए वह वातावरण और जीवन त्यागिक हो सकता था, वे रिल स्थान नहीं था।

एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र अन्य कार्यक्षेत्र से हिन्न था। सुखे बार-

बार अथवा झूठ कि मैं ने प्रगाढ़ और सुभाषित के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में

अनधिकार प्राप्त था। वेद रित्राम में मुझे रहना-भालेत था, उससे कुछ

हट आया है।" स्पष्ट है कि कालिदास का सुख-मुखिया का मोह घुटन, टूटन

एवं आँखता में परिणत हो जाता है।

लेकिन सुख-भोग के पीछे दौड़ने वाली "लहरों के राज्य" की

हृदयरी अपने पति को भी अपनी इच्छा पर नियाम का प्रयत्न नहीं करती है। क्योंकि

वह जीवन को सामना चाहती है। अपनी आमनेमात्र को छोड़ देना नहीं चाहती।

नन्द भी सुख की लालसा में यही कार्य करता है, जो हुन्दी चाहती है, "मुझे

1. "आधार का एक दिन", पृ. 113.
मान वही करना है, जो तुम चाहोगी, और ये ही करता है जैसे तुम चाहोगी।

अपने तीन दर्द पर अधिक विश्वास रखने के कारण शुद्ध दर्द समझती है कि नन्द भी उसकी दुखाओं की, उसकी आँख की अवहेलना कर उसके विश्वास पर चोट नहीं पड़ेगा। लेफिन अंत में उसका यह विश्वास नन्द के दीविज होने से खण्डित होता है। उसका परिवार का जीवन विचर जाता है। वह सब आत्मा अभिमान है साथ धीरे उठता है, "नहीं, तो दोहरे ते नहीं आये। जो आधा यह क्षण कोई दूसरा ही है।" विश्वास तो दोनों का ही खण्डित हो जाता है। अतः दीविज नन्द आत्मा और सत्ता शायद ते बहने से बाल जाता है और शुद्ध दर्द स्वीकार वही रहती है।

रंगमंच पर प्रतिष्ठित पुल्लु-मृति और स्त्री-मृति भी नर-तारी की जीवन दृष्टिकोन को ही उभारता है। पुल्लु-मृति की अवधारणा सांसारिक जीवन में लीन नन्द के सन्दर्भ में तथा सयसत नरकेश के संदर्भ में उपयुक्त बिंदु है। उसकी बातें दृष्टि हुई हैं और अयो आगाम की ओर उठी हुई हैं। इससे लगता है कि वह पार्थिव और अपर्थिव जीवन से संबंध टोकर मृति की बातमा करता है।

नारी-मृति ज्ञान का प्रतीक है। उसकी बातें सिमटी हुई हैं जब उसकी अयो वर्तमान की ओर चुकी हुई है। लौकिक मुख-भोग के अन्त में जो परिणाम होता है, उसकी ओर नारी-मृति का दर्शन राकेश ने आत्मविश्वास दी है। नाटक के आरंभ की मूर्तियाँ, अपर्याप्त, लौकिक मुख्योंक्त शुद्ध अन्त में बेहतरा यथा परामर्श वहीं है। सबसे यह कि राकेश ने इन मूर्तियों के माध्यम से आत्मविश्वास शुद्ध नारी के आपसी सम्बन्ध के पथार्थ को उभारते हैं इस प्रयत्न किया है।

1. "लहरों के राजहंस", प. 75.
2. यही, प. 148.
"पैर ले की कुमीस" के बुजुर्गवाला का एक मात्र लक्ष्य है-अपने जीवन में सारे सृजन-दृष्टिकोणों घुसाना। इतिहास वह पुहुँच भी करने से हिस्सा नहीं। वह ठुड़ल इस ध्वनि वा सप्तकोण देता है, "ये से लॉक्कडॉर्ड कला करार। करोड़ों का मान समग्र किया। लाखों समय रिचर्ड में दिये, करोड़ों का टॉवर पढ़ाकर काला था जमा किया। इस लेख के भीतर या और अपना की नहीं, अपनी ठुड़वियाँ वा का भवन करना, में आकाशों में पहला था। लोग बातचीत के लूहण के इलाज दूर्देरी की वीडियो कर रहे हैं। अब लोकवाद में तर गए जहां की ताक करने की तरकीबें बोल सत्ता है... कमियाँ अन रही है। कमिशन वैशाख जा रहे हैं। सब पत्रकार युक्त हैती आति थी।" मनुष्य-दुनिया के अतिरिक्त सब ठुड़ल तका। पर वनस्पति या प्यार नहीं। अतः अपनी जीवनकाल की वह निर्धारण ही पाता है। आसिर वह अपने लिए पर पृथ्वीताप भी करता है। वह कहता है, "लेकिन आज में आज अब हैं कि हृदस्रोत की मौत नहीं, ठुड़ अपनी मौत भी हैं... इस बाद पर मेरा कस नहीं।" यदि पर बुजुर्गवाला की श्रासदि गहरा हो जाता है।

राउल की कहानी "लॉक्स" में बम खड़े पर अधिक से अधिक सृजन-दृष्टिकोणों आगे की इच्छा रखनेवाला लाला नामक एक आधुनिक व्यक्ति के लिये पाठ है।लाला विरियान सबका या प्रतिनिधित्व है। आज हमारे समय में ऐसे अनेक लोग हैं, जो सर्व सृजन-दृष्टिकोणों आगे की चाहत हैं, पर हमें आधिक अवस्था नहीं चाहते हैं। पहलवान वे बदन्तवाद के आम के तर होता है, फिर ही लाला अपनी फलनी और बच्चे के लाख तरकारी रेट तो जमा रेट पर घोड़े पर जाने के लिए वैसे घण्टों तक बंदा रखता है। यदि वह घण्टों तक प्रौढ़कर करने के बजाय, वैद्य जाना तो आसानी से वहाँ पहुँच सकता है। लेकिन वैद्य जाने के दारे में वह सोचता तो नहीं है। शायद वैद्य जाने से वह अपने आपको खोटा महसूस करता है।

2. यही, पृ. 109.
इस धारणाकर ऐसी ओन्न प्रकर है, जो हृदयखाना है पीछे भारकार अन्त में परागित हो जाती है। उसनेे प्रभावित है कि वर्तमान-प्रवरितियाँ निर्यक नहीं हैं। तब तो यह है कि विविधाता अवश्य है। इस स्थिति पर पड़े प्रभाव हैं वर्तमान प्रकर।

सत्रक-पुनः सम्बन्धः भाषिकता के पहलुः

आज का आदर्श याचिका सम्बन्ध के तले परा हुआ है। इसके लिए कहा जाता है कि उसकी भाषिकता पर पुकार है। आज का मनुष्य यन्त्र का पुर्ण है। लेकिन यह उतना सच नहीं है, क्योंकि मनुष्य चाहे जितने स्फोक्त सामान्यावले वहाँ न हो, पर उसकी तदत में भाषिकता बनी ही रहती है। यही तदन उसे मनुष्य बना चौड़ता है। राजवंश की रचनाओं में मानवीय मन की तद में निस्कित सामान्यता को उभारने का प्रयत्न अग्रित दिखाई पड़ता है।

"अधान का एक दिन" में यह मानिकता मलिका में स्पष्ट होता है। वह अपना तन-भन मानिदिता पर स्वीकार कर देती है। वह अपनी भो ते जतनी है, "मह ने भावना में एक भावना का उभार किया है। मानिकता वह लम्बाई और तब लम्बाई में बढ़ती है। मे द्वारा में अपनी भावना में प्रेम करती है, जो पलिका है, अनवर है।" इस समय में कोई क्लेश नहीं।

एक अनिवार्यतता याचिका सम्बन्धक ही इसमें निर्दिष्ट है।

मानिदिता में भी मलिका से अनुप्रयोग प्रकार के लगाय है।

पर अपनी अभावाचार और मानकीनिता के कारण वह मलिका से विवाह नहीं।

1. "अधान का एक दिन", पृ. 21.
कर पाता है। ऐसी स्थिति में उसे उपजायिक के राजकृति बनने का मौका मिल जाता है तो वह मल्लिका के अनुराग की ओर हंगित होने के कारण वहाँ जाना नहीं चाहता। हिन्दु मल्लिका उसे समझाती है कि श्राम में रहने हुए उसकी कार्य-प्रतिभा का सम्पूर्ण विवाह नहीं हो सकता। अतः वह उससे मार्मिक प्रश्न करता है, "तुम समझते हो कि तुम इस अवसर को दुःखाकर यहाँ रह जाएंगे तो मुझे सुख होगा?" फलतः वह मल्लिका की शरणा ले उपजायिक की ओर प्रस्थान करता है।

आखिर जब कालिदास उपजायिक में महान कवि के रूप में परिवर्तित होकर प्रियंकुंजरी से विवाह कर लेता है तो भी वह कालिदास का बुरा न देख पाता है, न तुम पाती है। वह अपने कस्ठियों को आलमविघात के साथ सहन कर लेता है। क्योंकि वह स्वार्थरहित होकर कालिदास को उत्सर्ग की ओर पहुँचने की कामना रखनेवाली नारी है। इसलिए वह कहता है, "मुझे अभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया।" तुम रचना लगाते रहे और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूँ।" मल्लिका और कालिदास के साथ के सम्बन्ध को लेकर उसकी माँ अमिता का श्रद्धा होती है, "माँ का जीवन भावना नहीं, कर्म है।" तब मल्लिका माँ के अनुरोध करती है, "उसके सम्बन्ध में कुछ न कहे माँ।"

इस प्रकार मल्लिका कोशा कालिदास का पक्ष लेती है और अपनी भावनाओं को सर्वप्रथम मानती है। इन दोनों के बीच के सम्बन्ध को परिभाषित करना नामुमकिन है। क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे के लिए निकट हैं कि कोई भी उसे अलग नहीं कर सकते। शारीरिक सम्बन्ध के भौतिक ध्वासन के तौर पर उन दोनों

1. "आचार्य का एक दिन", पृ. 52.
"अन्तराल" उपन्यास की श्रायमा कुमार के साथ मिलकर एक भावनात्मक संबंध तयार किया है। दोनों अपने-अपने संबंधों की तलाश में "उपलब्धि का क्षण" पाना चाहते हैं। यह अद्वय अभिलाषा ही श्रायमा को कुमार के पास ले आती है। यह कुमार से कहता है, "इस बार भी यहाँ जाती थी, तो शायद यही सबसे बड़ा प्रलोभन मन में था कि हम यहाँ हो। सब छोड़-छाड़कर यहाँ आ रहने की शोधना, लगता है इसके मूल में यही प्रलोभन था।" ¹ उन दोनों के समबन्ध में एक प्रकार की अद्वयक्षेत्रता है। यों तो उन दोनों के संबंध को भावनात्मक संबंध बना सकते हैं। उसी संबंध के शीर्षा सब कुछ पाना यात्री है। इस बात को स्पष्ट करती हुई वह कुमार से कहती है, "तुमने एक बार कहा था कि संबंधों को दिये गए सब नाम सुविधा के लिए हैं।... वास्तविक संबंध इतने सुकृम होते हैं और स्वतंत्र-व्यक्ति के साथ इतने अलग, कि उन्हें नाम दिये ही नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे और अपने संबंध को बिना नाम दिये उसमें से सब कुछ पा लेना वाली ही।" ²

यह ध्यान देने की बात यह है कि दोनों इस भावनात्मक या नाम-हीन संबंध की धरों में असफल हो जाते हैं। इस संबंध में हैं आम तौर पर श्रायमा का कथन इतिहास है, "अन्तराल" एक संत्रास और एक पुस्त वे भी अपने संबंध की कहानी है। उपन्यास के दोनों पात्रों -श्रायमा और कुमार के जीवन में तो रिक्त कोशल है। श्रायमा के जीवन में उसके पति का और कुमार के जीवन में एक तन्त्रिके किसी पीली-सी लड़की का, जिसके संबंध से उसके कभी अपना घर बसने की कल्पना में पोजिशन थी। ये दो रिततारे दोनों की अपने संबंधों की स्वाभाविकता

1. "अन्तराल", पृ. 213।
2. यही, पृ. 213।
को स्वीकार नहीं करने देती हैं। फलतः दोनों अलग हो जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

"एक पंडुल पृथक्का" में राकेश ने स्त्री-पुरुष के भावनात्मक संबंध को प्रतीकात्मक रूप में विचित्रित किया है। आधुनिक समाज का पुरुष रिश्तों के साथ अपने पौर्णिमा दिखाने के लिए प्रयत्न करता है, पर दुखित स्त्री उस पर आकर्षित न होकर आगे बढ़ती है। किन्तु बेघरी होने के कारण वह अन्त में पराजित हो जाती है। यहीं पर भी यही हुआ। काला मुर्गा अपने यहाँ आयी मुर्गियों को आकर्षित दराने के लिए उसके प्रेम से व्यवहार करता है और पड़ोस के मुर्गों को प्रेरित करके भगाता है। इस पर भी मुर्गा उस पर आकर्षित नहीं होती है तो मुर्गा पड़ोस के मुर्गों के साथ बहुत देर तक लड़ाई करके उसे पराजित करता है।

अपनी विजय -पर गई करके जब मुर्गा आता है तो, "अपनी प्रेमिकी मुर्गा को खाने की टेबल पर पाने का आसास करता है। दरअसल यह आसास नहीं है, यह घटना है। इसी तरह आज की जिन्दगी में कई घटनाएँ अत्यन्त कार्यवायक होते हुए भी सहजता से संप्रेषित नहीं हो पाती।"  

कहने का मतलब यह है कि अक्सर बहुत-सी नारियों की निवड़ित भी यहीं है। जो स्त्री अपने प्रेमी को चुनने और उसके साथ रहने के लिए समय लेती है, वह अक्सर पागल या हिंसक पुरुषों की दिक्कत हो जाती है। इस प्रकार राकेश ने एक और वैज्ञानिक अंग्रेज़ के मामले जो अंतरांत को निश्चित करने का प्रयत्न किया है तो दूसरी और उसके भीतर ही भीतर गुटनेराली मानवीयता को।

पारिवारिक विधान एवं स्त्री-पुरुष सम्बन्ध

परिवार भारतीय सामाजिक गठन एवं संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थिति अदाकरता है। वहीं व्यक्ति अपने को सुरक्षित पाता है। पर दो विषय मुद्दे, वैज्ञानिक प्रगति, स्वायत्तता परवर्ती विधानात्मक परिस्थिति ने इस सुरक्षा के माध्यम

1. डॉ. शुभाम अग्रवाल, "मोहन राकेश: व्यक्तित्व और दृष्टिकोण" पृ. 344।
2. डॉ. उर्मिला गिर्ला, "आधुनिकता और मोहन राकेश", पृ. 65।
को तिल्ल-बिल्ल कर डाला । फलत: पारिवारिक जीवन में अब नई नई कठि-नाइयाँ सामने आने लगीं। सरल एवं सुमानता का भार छोड़कर वह जनिता की ओर अग्रसर होने लगा। इस कारण पारिवारिक जीवन की सहजता एवं सरलता गायब हो गयी।

पारिवारिक जीवन की दूसरी प्रमुख समस्या गुलत: स्वतंत्रता के बाद
उपरे हुए आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की देन है। पारिवारिक जीवन की
उपर्युक्त नयी मान्यताओं के कारण व्याख्या आज परिवार संकट में है। वह सिरदर्श पढ़ते और बवादी की ओर तेजी से बढ़ रहा है।" अतः
अब व्याख्या सिफ्त अपने रूप में पुरुषोत्सव है। उसमें अनुभव किया कि "अर्थ" ही सारे
सम्बन्धों के मूल में है। इसलिए अब वह सम्बन्धों के पुरुष विमुख हो गया।
उसे सभी पारिवारिक सम्बन्ध औपचारिक लगाने लगे। माँ-बाप, भाई-बहन, बेटा-बेटी सब के सब इसके विकार बन गए। "पारिवारिक विषय: के अन्तर्गत केवल पति-
पत्नी के संबंधों में हैं। तालाब तालाब नहीं होता, वरन उन संबंधों में भी सत्ता
आ जाती है, जो विषय: की मूल्य बनाने में अपनी लघुत्तम अदा करते हैं। पारिवारिक
संबंधों के प्रभावित होने के परिवार की अथवा अलग-पति-पत्नी के मध्य तालाब परिवार के लिए
विशेष रूप से पाराक होता है।"

राकेश की रचनाओं में इस बदली दुई परिस्थिति एवं मानवीय तनाव
का विवेचन हुआ है। "आप-अपूर्व", में ऐसे एक मध्यवर्ती परिवार के विषय: एवं अन्त-
रिक्तताओं का स्पष्ट हुआ है। यहाँ व्याख्या संबंध अपूर्व तथा दूसरों को अपूर्व
अनुभव करता है। पर के सारे पात्र एक-दूसरे से कटे हुए हैं। पति-पत्नी और
बच्चों के वीच कोई सल-मिलाप नहीं है। दृष्टेक तालाब अपने-अपने मनमाने गलता है।

1. डॉ. शिवप्रसाद वर्मा, "आपूर्विक परिवार और नवलेख", पृ. 40।
2. डॉ. मा. नारायण एमदा, "समाजसाधक हिंदी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध",
पृ. 98।
पति-पत्नी सदा एक-दूसरे पर दोषारोपण करके रह जाते हैं। महेन्द्र के बेकार होने पर सातिश्री की घर की सारी सज्जाएँ का तत्काल खुद उठाना पड़ता है। इसलिए उसे नौकरी करके घर का सारा भोजन उठाना पडता है। ऐसी अवस्था में घर के सब लोग महेन्द्र के नकद करते हैं। महेन्द्र का पालक लगने के सोफे पर खुलते देखकर सातिश्री कुछ होती है। वह कहती है, "दिन भर घर पर रहकर आदमी और कुछ नहीं, तो अपने कपड़े तो घटाकर से रखकर कहां?

पत्नी की कटौतियाँ को महेन्द्र के लिए महेन्द्र को अपनी बेकारी देखकर कहती है। समुद्र महेन्द्र और यही दिवसिता उसकी आर्थिक सिद्धांत के लिए उत्पन्न हुई है।

इससे तरफ सातिश्री भी ढूंढी हुई दिखाई पड़ती है। महेन्द्र की तरह वह भी अपनी पीड़ा प्रकट करती है, "यहाँ पर सब लोग बहसपन करते हैं यद्यपि 2 एक माफ़ी, जो बड़े-बड़े आदमी पीसकर रात को दिन और दिन को रात करती रहती है 9 मगर किसी के मन में ज़ुरा-सा भी बुद्धियाँ नहीं है। इस चीज़ के लिए कि कैसे में...।" वह किसी न किसी प्रकार अपने घर को उद्देश्यिा याही है। अतः वह अनेकों को कहती नौकरी दिलाने की कोशिश में सिंहानिया के संबंध जोड़ती है, "इसलिए कि किसी तरह इस घर का कुछ बन सके। कि मेरे आकली के अगर बड़ता बोझ है इस घर का। जिसे कोई और भी मेरे साथ दोनों बालों हो सके। अगर में कुछ बास लोगों के साथ संबंध बनाकर रखना यादहै तो आपने लिए नहीं, हुम लोगों के लिए।"

यह अपने घर को ढील करने का उसका सारा प्रयत्न बेकार सिद्ध हो जाता है। अब सातिश्री के लिए अपना घर नरक है। नालावक अंध्रा पति,

अपने वेतन के साथ भागकर लापस आयिए। बड़ी लड़की, मिठाई एवं आलसी लड़का, कम उम्र में ही। अपने घर में भरते रहते घर दोनों लड़की लड़की सब सातिश्री को चारों ओर से नौकर रहते हैं। अमृतका के बोध के समारोह सातिश्री के लिए अपना जीवन


2. दही, पृ. 42.

3. दही, पृ. 53.
अर्थिते लगिता है। आखिर वह अपने घर से मुक्त होना चाहती है। इसी उद्देश्य से वह बड़ी लड़की से कहती है, "अब मुझे नहीं होता, बिन्दु। अब मुझे नहीं सेमलता।" लेकिन विषयवाद यह है कि वह मुक्त होना चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाती।

माँ-बाप की तरह बच्चों के बीच भी कोई मेल-मिलाप नहीं है। बड़ी लड़की का पलायन, छोटी लड़की का समान व्यवहार, लड़कियों के बीच बाटकर रखनेवाला आत्मी लड़का आशोक सब इस घर की अनेक इकाइयों है। एक ही घर के सदस्य होने पर भी सब एक-दूसरे से कटे हुए हैं, "परिवार का एक-एक सदस्य एक-दूसरे से कटा हुआ रहता है। उस विभाजन घातकपर में रहना उनके लिए मजबूरी है और हर सदस्य घर से निकल भागने की तलाश में रहता है।" 2
इस प्रकार आरम्भ से अन्त तक इस नाटक में परिवारिक विघटन की गाथा चित्रित है।

मोहन राकेश के उपन्यास "अन्येरे बन्द कमरे" के हरबंत और नीलिमा का पारिवारिक जीवन तफ्स नहीं होता है। दोनों की जिन्दगी सदा नवायुमूर्ति लगती है। व्यंग्यि पति-पत्नी के सम्बन्ध में जो चीज होती है, जो चीज होनी यादिए, वह उनमें कभी नहीं होती है। नीलिमा कहती है, "अगर में ठीक कहीं तो वह चीज कभी भी कही नहीं। हम लोग केवल यह मानने का प्रयत्न करते रहे हैं कि वह है और उसे लाने का प्रयत्न करते रहे हैं। मगर वह चीज नहीं आयी, नहीं आ सकी। इस बीच एक बच्चा भी हमारी जिन्दगी में आ गया है। उसकी वजह से भी हमने घात फिर चीज प्रदान हो जाए, मगर वह नहीं हुई।" 3 इसी तनाव के कारण दोनों कभी-कभी अपने परिवेश से उठकर चले जाते हैं। किंतु ध्यान देने की बात यह है कि वे एक-दूसरे से अलग रहना चाहकर भी, अलग नहीं हो पाते। अतः पुनः वे उस नवायुमूर्ति जिन्दगी के लिए

1. "अध्यय- आघरे", पृ 34।
2. डॉ. सप्ताह उपेन्द्र, "मोहन राकेश के नाटक", पृ 88।
3. "अन्येरे बन्द कमरे", पृ 508।
विवाह हो जाते हैं।

एक -दूसरे से पुनः बुझ जाने के बाद भी, जब दोनों छोटी-छोटी बातों पर लड़ने लगते हैं तो उनका बेटा अच्छा रोने लगता है। वह निराश होकर हरबंस के पूरता है। "तुम ममी को इस तरह क्यों डालते हो?" आगे वह ममी से भी प्रश्न करता है। "तुम बाबा के सामने इस तरह क्यों कहती हो?" लेकिन बच्चों की बातों पर दोनों का कोई असर नहीं पडता। परिप्रेक्ष्यक दोनों के विचारों और आपती व्यवहारों में दूर बर जाती है।

अब इस अपनी कहानी को कम करने के लिए जब नीलिमा अपनी माँ के पास चली जाती है तो हरबंस उसकी बड़ी जुल्ला की ओर आकर्षित होता है। क्योंकि वह अपने आकर्षणों की पूर्णता उसमें देखता है। यह नीलिमा की भौति करनेवाली बौद्धिक व्यक्तित्ववाली युवती नहीं है। उसे पुर्ख के अनुशासन में रहना असुविधा नहीं लगता। इसलिए यह नीलिमा के जले जाने पर दिन-रात हरबंस की सेवा करती है। इस बात को लेकर भी उनके बीच समस्याएं खुदी हो जाती है।

राकेश की "मस्फल" परिवारिक विघटन की कहानी है। पति-पत्नी होते हुए श्री धनपतराय और नसीम के बीच और उनकी पुत्री इन्दु के बीच कोई आपत्ति नहीं है। ऐसे की कमी के कारण नसीम अपने पति के दौरान लक्ष्य गोपाल से भुवना चाहती है। पर गोपाल दूर नसीम से ज्यादा इन्दु पर पड़ती है और वह दोनों को बम्बई के एक नये होटल में ले जाना चाहता है।

इसी उद्देश्य से वह नसीम से कहता है, "तू धनपतराय को छोड़ दे। मैं होटल बोलता हूँ कि मेरे ताकाम कर लाभ स्मरण कर।" इन्दु को मेरे हवाले कर दे - जो जी चाहे।
नसीम यह छात्रकर भी ऐसा नहीं कर पाती। क्योंकि वनपतराय की अपनी बनना चाहता है। इसलिए वह अपनी बेटी को तेजी से बढ़ाकर पैसा कमाने का फैसला करता है। नसीम जब इन्द्र पर बेढ़ा जाने की बात अपने पति से कहती है तो वह कर्मचारी से कहता है, "इन्द्र को तेजी से बढ़ाकर पैसा कैसे करता है। तेरी चाल न घरेलू है, हरामजड़ी। नौ साल में पाल रहा हूँ, इतना पैसा खर्च किया। कमाई के दिन आप तो उसे तैयार साथ देंगे।" अभी निकल जा यहाँ से। उसको साथ ले गई तो दोनों का बुना पर लूगा।" अबिर वनपतराय के इन्द्र के पैसा लगानेवाले सेटों के सम्मुख नापने के लिए चिंता करता है। नाचते-नाचते वह बेहोश होकर गिर पड़ती है और वनपतराय के सारे स्वप्न दुख़के-दुख़के हो जाते हैं।

"ग्लास टैंक" में राकेश ने बड़ी दुःखाता से एक पारिवारिक दुःख है। नीरू और ममी दोनों सुभाष की ओर आकूंट हुई। ममी को सुभाष ने बचपन के ही समय है, परवर्ती यही कहती है कि उसे लगात नहीं, सहानुभूति है। जब नीरू ममी से पूछती है, "सुभाष हम लोगों को क्या लगता है?" तो उसे कहती है, "वह हम लोगों का कुछ भी नहीं लगता।" नीरू के मन में सुभाष की प्रति दर्दें भिंतित प्रमिल भाव है। इतने सुभाष जब धाप पर गोल जाने की बात कहता है तो नीरू को लगता है, "ऐसे किसी ने कह्ये मतदार मुझे चढ़के पानी में फेंक दिया हो।" जाते वक्त सुभाष सिंह हिलाकर हाथ जोड़ देता है तो नीरू की प्रतिक्रिया देखते हैं, "मैं हाथ नहीं जोड़ सकती। जुड़वान उसे देखती रहती। तांगा मोड़ पर पहुँच तो लगा कि उसने फिर एक बार उसी नुबर से मुझे देखा है।" अबिर जब नीरू अपने कमरे में पहुँचता है तो वह महसूस करती है, "ऐसे जब तक घर के अन्दर भी--अब घर से बाहर जली आयी हूँ।"

1. "इन्द्र के खड़दर", "मस्तिष्क", भू. 88।
2. "फोलकूल का आकाश", "ग्लास टैंक", भू. 27।
3. "डैडी", भू. 27।
4. "डैडी", भू. 27।
कई दिनों से हुभाष की चिट्ठी न आने के कारण दोनों चिन्तित होते हैं। नीरू कहती है, "पत्नी गुन्दर मिली होगी। तभी न आदमी सब नाते-रिश्ते भुल जाता है।" 1 ममि कहती है, "नाता-रिश्ता नहीं, फिर भी मैं सोचती कि ...." 2 समस्या दोनों उसके पत्र के लिए द्वारकुल रहती हैं। स्थिति है कि नीरू और ममि दोनों अलग दूर की पात्र हैं। इसलिए नीरू और ममि ग्लास-टैंक की उन मछलियों की है, जो निरंतर बाहर आने को छोड़ देती हैं। उस घटनाटंत्र को सारथि बनाने के लिए कोई कदम नहीं उठा सकती।

ग्लास-टैंक की मछलियों की तरह वे भी स्टैप्टाटी रहती हैं। बाहर आना वे भी चाहती हैं, पर उनकी नियति भी उन मछलियों की-ती है।

जानिए कि परिवार आज काफी विचित्र हो गया है। आधुनिक संसार ने इस दिशानुसार आज तो दिखाया है। स्वातंत्र्यवृत्त परिस्थिति में लट्टी-पुस्तक संबंध का जो नया रूप उभर आया है, उसको समझते के साथ पकड़ने एवं समझने में राष्ट्र लक्ष्य हुए हैं। राजी की रचनाएँ लट्टी-पुस्तक संबंध के गहन यथार्थ का सुन्दर विशेषज्ञ करके आधुनिक भुज्य की वास्तवी को तमाम करने का कार्य करती है। मतलब यही हुआ कि राजी के पाश रचना के सरलता को लोकारण समायोजित के विशाल परिवेश में अपनी प्रसंगिता साहित्यिक वर्तमान है। यही रचना की मौलिकता की परख है।

1. "फोटो का आकाश", "ग्लास - टैंक", पृ. 15।
2. यही, पृ. 15।